वल्लभकुल चरित्र दर्पण।

जिस्को नवरत्नकमेटीके प्रेसीडेन्ट, व हिरण्यगर्भ सम्प्रदायके आचार्य्य भारतहितेच्छुक दृढ राजभक्त, प्रजाशुभचिन्तक, विमलार्य्यवंशज मिष्टर ब्लाकट साहब ने लोकोपकारार्थ तथा [illegible] कुलजवृन्दोपदेशार्थ रचकर

इलाहाबाद

धार्म्मिकयंत्रालयमें पण्डित रामगोपालशर्म्मा [illegible]बन्ध से मुद्रित हुआ।

द्वितीयबार १००० (सं० १९५२) मूल्य प्रतिपु० ॥)
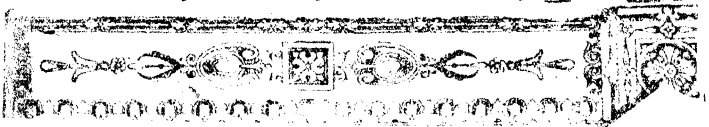
धर्म मूर्त्ति मिष्टर ब्लाकट साहब

भूमिका ।

अनुमान पांच सौ वर्षके व्यतीत हुये कि भारत वर्षके दक्षिणमें 'तैलिंग' नामक एक प्रदेश है वहांके एक नगर में 'नारायण भट्ट' नामक एक तैलिंग ब्राह्मण रहतेथे उन के श्री लक्ष्मण भट्ट पुत्र हुये जब इनका बिबाहादि गृही कर्मकुल हो चुका था तब अकस्मात् इनके मनको संसारकी ओरसे घृणा उत्पन्न हुई और गृहको त्याग तूंबी कठारीले काशीको चले आये और सन्यासी होगये जब इनके माता पितासे इनकी युवास्त्रीका वियोग बिलाप न देखागया तब वह काशी आये और अपने पुत्र संन्यासी लक्ष्मणभट्टको ऊंचनीच समझाय बुझायके घरले गये जब सन्यासोभ्रष्ट लक्ष्मणभट्ट पुनः गृहस्थाश्रमके धर्म्मोंमें आचरितहुये तब उनके एक पुत्र वल्लभ स्वामी नाम अच्छा प्रारब्धका बली उत्पन्न हुआ जो थोड़ेही काल में विद्या पढ़के एक अच्छा धुरंधर पण्डित होगया विवाह होने पर वह काशी व अड़ेल (प्रयागके निकटहै) में रहा और

'पुष्टी मार्ग' का एक नवीन पन्थ 'वैष्णवमत' के अंतर्गत निकाला समय के प्रभाव से उन दिनों भारत में अविद्या की घटा टोप अंधेरी छा रहीथी और ब्राह्मण से ले शूद्र पर्य्यन्त प्रत्येक जाति को इनका कंठी बंध होजाने और ब्रह्म सम्बन्ध पाने का अधिकार इन्होंने देदिया था इसकारण इनका नवीन पन्थ थोड़ेही दिनों में बर्षाके समुद्रवत् भारतके अनेक खण्ड मंडलोंमें फैल गया और इस तरह देश के लाखों आदमी इनके कण्ठी बन्ध (शिष्य होगये और फिर बल्लभ स्वामी 'श्री आचार्य्यजी महा प्रभू' के नामसे बिख्यात हुये श्री आचार्य्यजी' के दो पुत्र श्री गोपीनाथ जी (मर्यादा पुरुषोत्तम) और बिट्ठल नाथजी (पुष्टी पुरुषोत्तम) जो 'गुशांईजी' बोले जाते थे उत्पन्न हुये ये भी महात्मा और भगवद् भक्तथे 'गुशांईजी' के गिरधरजी, गोबिन्द जी, बालकृष्ण जी, गोकुलनाथ जी, रघुनाथ जी, यदुनाथ जी और सातवें घनश्याम जी ये सात पुत्र उत्पन्न हुये श्री आचार्य्यजी और उनके पुत्र पौत्रादि का पांडित्य सौजन्य ब्रह्मत्व और उनकी सच्चरित्रता इस बातसे स्पष्ट बिदित होता है उनके नयेमतका प्रचार देशमें शीघ्र बिस्तृत होगया इस के अतिरिक्त और भी कई उदाहरण उनकी सच्चरित्रता के साक्षी हैं परंतु शोक ! कि उनके पीछेके सन्तानों में अविद्या असभ्यता, असच्चरित्रता आदि बातें क्रम पूर्वक दिन २ बढ़ती गईं और होते २ आजकल के बर्तमान सन्तानोंमें तो ऐसा घोरमहाघोर अंधेर और अनर्थ छागया कि जिसका अधिक समाचार लिखते ग्रन्थ कर्ताकी लेख नी भी अपना कार्य्य पूर्ण करनेसे असमर्थ होगई ॥ लोकमें यह बात प्रसिद्ध है कि कान सुनीका बिस्वास लघु

आंखों देखा सत्य सो मैंने अपनी आंखों से इस ,बल्लभ कुलीय पन्थ' के बर्तमान 'उपदेशकों (गुशांईयों) से बिलक्षण अलौकिक अपार लौकिक चरित्र अच्छे प्रकार देखे क्योंकि हमारे घराने के पूर्बज इसी सम्प्रदाय के शिष्य होते आते थे उसी रीति के अनुसार मैं भी इसी बाल्यवस्याहीमें इसी सम्प्रदाय का शिष्य हुआ और कई महाराजों अर्थात् 'गोशांइयों' के पास सेवामें भी रहा और इनके बाहर भीतरकी समस्त प्रकाश्य व गुप्त लीलायें देखी और भोले शिष्योंसे रुपया कमानेके उतार चढ़ाव भी भली भांति लखे जब देखते २ मन का घड़ा अच्छी तरह भर कर उभरने लगा अर्थात् इन महाशयों के कौतुक देखे न गये और बज्र सा हृदय भी त्राहि २ करने लगा तब अंत को जीमें एक महा घृणा उत्पन्न हुई और बिचार किया कि इस सतसङ्गको बिना बिसारे तुम्हारा लोक परलोक कदापि नहीं सुधर सक्ता निदान उसी क्षण से सब का त्यागन कर चित्त में बैराग्य का स्थापन किया एक दिन निरद्वंद्वता पूर्बक बज्रकी लतापता में भ्रमण करते २ इस पन्थके भोले भाले अनुयायी एवं अज्ञान सेवक लोगों (जो मृग तृष्णा वत केवल कल्याण के धोखेही धोखे में अपने धन धर्म का नाश करते हैं की सोचनीय दशा पर ध्यान आवै तो मन को अति खेद एवं चित्तोत्ताप हुआ इसी अवसरमें एक आकस्मिक भगवद् प्रेरणा हुईकी संसारमें दो प्रकार के लाभ हैं स्वोपकार और परोपकार मनुष्यों को दोनों लाभों का साधन अवश्य है जिस तरह तूने अपने सर्बार्थ साधक मनुष्य जन्मको इन गोमुख व्याघ्रोंसे बचाया है उसी प्रकार अन्य अज्ञान संसारी जीवोंको भी सावधान

करके इनकी घात से बचा इस लिये संसारी लोगों के उपकारार्थ इन लोगोंकी कुछ प्रकाश्य बार्ताएं प्रगट करनेका भार अपने शिर पर उठा कर यह पुस्तक निर्मितकी ।

अब सज्जनोंसे निवेदन है कि भूल चूक को सुधार कर दास को चिरबाधित करें— किमधिकम्

केवल आपका शुभचिन्तक

मिष्टर ब्लाकट साहब

श्रीहरिः

कुलक्षण कथा ॥

अर्थात्

"गोस्वामी श्री पुरुषोत्तम लालजी मथुरा वालेके पौत्र व गोस्वामी श्री विट्ठल नाथजी के पुत्र श्री ब्रजनाथ जी की कन्या पन्नो बेटो जी के विवाह की कथा।"

पन्नोबेटी की सगाई एक प्रतिष्ठित भट्ट को हुई जब ब्याह के दिन निकट आये तब सब कुटम्ब के गुसाईं स्वरूप इकत्र हुये और ब्याह बिषयक कामों का सोच

विचार करने लगे-गोपाल लाल व बालकृष्ण लाल आदि सबने विचारांश किया कि भाई अब ब्याह सिरपर आया, दिनदिन छिनछिन की भांति निकले चलेजाते हैं इस से हाथपर हाथधरे वृथा बैठे रहनेसे काम न चलेगा इसकारण पानी पहिले पार बांधना अवश्य है। सब बातों का शीघ्र प्रबन्ध करना चाहिये ऐसा न होय कि किसी बात का इस स्वयम्बर में फ़जीता मचै और पीछे पश्चाताप रहै इस में इस प्रकार का यत्न करना योग्य है कि जिस से सब की लाली बनी रहै और कुल को दाग भी न लगै इस कारण सब प्रबन्धों से पहले महफिल की तजवीज़ करौ और झगड़े तौ पीछे हैं इस पर बल्लभ बंशोद्धारक सनातन कुल व्यवहार में लेश मात्र भी किसी प्रकार की कसर न रहनी चाहिये, सो आज पूज्यनीय मोक्षदाता हुस्ना तोखी आदि अप्सराओं को निवेदन और बिनय युक्त निमंत्रण पत्र लिखो और परम कृपाकारक पूज्य श्रेष्टबर सांगीत विद्या के साक्षात् अधिष्ठाता माननीय श्री कालिकादीन बिन्दादीन उस्ताद जी को भी प्रार्थना पत्र भेजना उचित है। इस तरह जब इन पूरण पुरुषोत्तमों की लैजिसलेटिब कौन्सिल में बेश्या बिल पास होजाने का समाचार शुभेच्छुक शिष्यों और हितैषी वैष्णवों को ज्ञात हुआ तो वे बड़े मलीन हुये और अवसर पाय इकट्ठे हो जूथ बनाय सब स्वरूप मण्डली के निकट जाय मस्तक नवाय नवाय बैठ गये।

श्रीगोसाईं

धर्मदास

फिर एक ने हाथ जोड़ सिर फोड़ अपनी बोली में जीभ तोड़ यों प्रार्थना की कि जै राज महाराज मैंने सुन्यौ है जो राज की मरजी या ब्याह में कंचनी नचाईवेकी भईहै सो राज यह बात करनी तौ आपकूं उचित नाहींहै। काहेते जो आप तौ धर्म के खम्भ हो और दैवी जीवन कूं उद्धार करावन हारे उपदेशक हो—देखो आजकाल शूद्र तकन ने जिनके कुल में ये दुराचरण बेश्या नृत्यादि होत हते अपने यहां सों ये नर्क कर्ता कुकर्म मिटाय दिये हैं और मिटावत जात हैं। और जो है सो आप तो जगत गुरू हो, ऐसे महा अनर्थ की बात काहे कों बिचारौ हौ, इन ऊधमन ते आप की बड़ी अपकीर्ति होयगी—एक तौ पहले ही आप के धर्म पंथ की लोगबाग बड़ी निन्दा करत हैं भरि २ पस्स (अंजली) धूरि उड़ावत हैं औ सुधारे वारे रात दिना कल नाहीं लैन देत सैकरान खोटी खरी सुनावत हैं तौहू आप तनकहू नाहीं सोचत जिह कहा बात है इन बा-

तन पर सब लोग थूकेंगे और तारी पीट २ कहैंगे कि देखो डोकरा कूं मरें अभी पूरी बरस दिनाहू नांय भयौ तौहू ये ऐसी ऐसी अनीति करत हैं तौ न जानें आगें कहा २ करेंगे-और जो खैर बेटा के ब्याह की खुसवख-तौ होती तौहू कछू परदा ढकि जातौ परि बेटीके ब्याह मैं तौ नीच लोगहू ऐसी उपाधि नाहिं उठावत-यातें तौ जितनो द्रव्य आप यामें झोंकौगे उतनें जातिही में कछू जस करौ वा ब्राह्मण वा अभ्यागत वा वेदपाठी विद्यार्थी वा अनाथ गौ आदिकन की ही रक्षा करौ वा ठाकुरजी कोंही कुंडवारौ आरोगाइयें जासें कछू जस होय कि फलाने के फलाने बड़े सपूत भये-और यों कं-चनी और भांड़ भडुअन को श्री ठाकुर जी को द्रव्य ख-वाये सों तौ उलटौ पाप होय गो-काहेते जो बेश्यान-कों द्रव्य देंनों गौवन के बध की वृद्धि करनी है काहे ते जो वे या द्रव्य सें अपने ईद बकरीद त्यौहारन ऊ-पर गौअन की कुरबानी करावति हैं-यासें बड़ेन ने कही है जो तुरकनी (मुसलमानी) बेश्यान कौ नाच क-रावन हारौ एक हिन्दू सौ गौहिंसकों और सहस्र ब्रह्म बधकों के तुल्य होता है और जयराज! आप तौ साक्षात अवतारहो और गोलोकपति हो और आप तौ साक्षात गोपाल हो सो या जन्म में भी "गोपाल लाल" नाम पायौ है सो आप को तौ अपने नाम के अर्थ से गौन कौ पालन करनें चाहिये नकि बध कौ हेतु-आप तौ गोस्वामी कहावत हो स्वामीन कौ काम तौ रक्षा करिबे कौ है कहौ जब आप गोबध के मूल कारण बेश्यानृत्य को कराओगे तौ आप के शिष्य सेवक आप को कहा कहैंगे? क्या अवतार फिर भी कहाओगे? क्या गोलोक

बासी बिछुरे हुये दैवी जीवों के उद्धारक फिर भी पुकारे जाओगे ? देखिये बेश्याम के नांच करायवे वारेनसों संसारी लोग सब यों कहत हैं, सो आपहू काे यों कहेंगे 'रंडियों की जात का बिश्वास करैं बेईमान, भली न करत ये तौ बुरी कों तय्यार हैं ॥ ज़र देवें जमा देवें प गड़ी हू उतार देवें पास न होय तौ उधार कों तयार हैं ॥ सेवकन कों लूट ये दिमाने ज़र लुटाय देवें बेश्या आधीन हो करात मिट्टी ख्वार हैं ॥ तनक ना लजावें खौफ़ जमहू कौ ना खावें चौड़े दहाड़े चिल्लावें कि हम हुस्ना के यार हैं" ॥

और जैराज ! बेश्या सब धन धर्म कों हरलेती हैं इनके जाल में तौ पूर्बजन्म के खोटे कर्म करनहारे महान् अधम मूर्ख फंस जाते हैं और अपने दोनों लोक बिगारत हैं—

"धन लूट के धर्म खराब करैं सब बातन से यह बड़ी चन्दरी ॥ दोऊ लोक को नाश करैं जगमें जिन के हृदे में ये बसें बन्दरी ॥ दुष्कृत ताल मृदङ्ग बजै और गावत राग महा गन्दरी ॥ जिनके घट भूत किलोल करैं तिनके घट में सँचरे कंजरी" ॥

इस बात को सुन समस्त गुशांई स्वरूप बड़े क्रोधातुर भये और गुशांई गोपाल लाल व बालकृष्ण लाल बोले कि रे मूर्ख तू बड़ौ वहिमुर्ख है हम कों उलटौ उपदेश देत है—तू कहा जानें अज्ञान पसू (पशु) हम तौ गौलोक से इन बेश्या आदिक प्रेमी जीवन के ही उ-

द्वारार्थ या पृथवी पर आये हैं-देख कृष्णदास अधिकारी श्री आचार्य जी मह प्रभून कौ सेवक आगरे ते एक मुसलमानी बेश्या लायौ हुतौ और वाकौ नृत्य श्री नाथ जी के सन्निधान करायौ हुतौ सो वह बेश्या अपनो संसारी देह त्यागि के नाथ जी की लीला में अंगीकार भयी हुती, यह बार्ता चौरासी वैष्णवन की "चौरासी बार्ता" पुस्तक में लिखी है तेनें कछू बांची है कै नांहि, सो जैसें वा बेश्या कौ उद्धार श्री नाथजी ने कीयौ हुतौ ताही प्रकार या समय की बेश्यान के उद्धार निमित्त हमने गौलोक ते आय कें यहां औतार लियौ है और हमारें तौ यह बेश्या उद्धारन की प्रनालिका सनातन ते चली आई है-देख चन्द्रमाजी की गद्दीवारे श्री बल्लभ जी महाराज (जो इन्हीं कामबन वारे देवकीनन्दन जी जो हमारी बड़ी निन्दा करत हैं तिनके दादे हुते) तिनने जैपुर में एक मुसलमानी बेश्या करि राखी हुती और देख टीकम जी महाराज कोटा वारेननेहूं एक तुरक कंचनी राखी हुती और देख सुनलै, श्रीनाथ द्वारपाल श्रीयुत् गोस्वामी गोवर्द्धनलाल जी टीकैत जो सब गुसांईन की नांक हैं उनकी लीला तू जानेंहीं है फिर काहे कों मूर्खता और संठपनै की बात करै है।

यह सुन वह बैष्णव बोला कि महाराज दोचार जनेंन नें यह धूर खाई तौ का सबन कूं यह अनुचित पाप कर्म करनों चाहिये यह कैांन चतुराई है कि दो

चार कर्म की मारी भेड़ कूंआं में गिरमरें तौ सब कौ सब झुंडहू वामें गिर के प्राण गमावै ? यह तौ कहूं नांहिं होत कै कोऊ दो एक आदमी चोर होंय तौ उन की सन्तान व जांत पांत सब चोरी करन लागै और राजदण्ड सहै, सपूत सन्तान कों तौ पूर्व पुरुषों के अच्छे २ कर्मन पै दृष्टि दैंनी उचित है बुरेन के बुरे आचरण कदापि देखने योग्य नाहीं श्री आचार्य जी महा प्रभून नें धर्म चलायौ धर्मकी रक्षा करी पंडितन कौ दिग्विजय कीयौ सोतो आपने सीख्यौ नाहीं और वेश्या विषयी सरूपन की परिपाटी गही, भला जा कालिन्दी श्रीयमुना पट-रानी के तट पै श्री आचार्य जी महाप्रभून ने तौ सभा बांधी है ता श्रीयमुना जी की नाक पै आप बेटी के व्याह में वेश्या नचाओ गे, धन्य है महाराज धन्य है, हम शिष्यन कैं तौ दुनियां में मुंह दिखायबे की जगै रहैगी नाहीं पर न जानें आप कों लज्जा रांड क्यों ना-हीं आवै है, परकैं जो नाथद्वारे वारेन नें गङ्गा जी में नांच और न जानें श्री बल्लभ ! सी बल्लभ ! ! कहां कहां उद्यापन कीये हुते तिनकौ जस सब धरती में हैही रह्यो है और धूर उड़ही रही है, पर खैर वह तौ खैल तमासे की वात हुती परन्तु आप तौ "कन्या विवाह" में यह अनर्थ कर्यौ चाहत हौ, हाय ! हाय ! ! सीबल्लभ ! सीबल्लभ ! ! महाराज हमारौ हृदय तौ या बातकूं सुनि कें बड़ौ दूख्यौ है, यासों हे जैराज अधिराज आप या

कुंभी पाक मार्ग का स्मर्ण अपने चित्तसे दूर करिये और वेश्या रांडन को नामहू ब्याह मध्ये जुबान पे न लाइये यह बात उस वैष्णव के मुहसे सुनी तो सुनतेही सब गोस्वामी उस बिचारे पर बिजली की तरह पड़े और ओलें की तरह उसके उपदेश के प्रत्युत्तरमें बचन कहे रे मूर्ख ! चुप रह क्यों वृथा बकवाद मचावै है उठ जा आज तेंने बड़ी मूर्खता को काम कीयो है अबजो तेंने या बिषय की कछू चरचा करी तो अच्छी बात न होगी तेरी बांट बन्द कर देंयगे और ठाकुरजीके दर्शन हू न करन पावेगो—पीछे गोपाल लाल व बालकृष्ण लाल बोले रे तेने कछू शास्त्रहू देख्योहै जो तू हमको उपदेश करतहै पर यह तेरो अधिकांस दोष नाय हैं यह तो कलयुग को ही प्रभाव है कि शिष्य गुरुन कूं और पुत्र पिता कों दोष देत हैं और नीति सिखावत हैं आज तू वेश्यानके बिषें हमें हटोका लगावत हैं पिछें कहे गो कि सेवक लोगन कों हूं अंगीकार मत करो तो कैसे काम चलैगो और दैवी जीवन को बेड़ा या अपार संसार सागर से कौन बिधि पार लगैगो ? और देख शास्त्रमें यह लिख्यो है "अविदित सुख दुःखं निर्गुणं वस्तु किंचित् जड़मति रिह कश्चित मोक्ष इत्याच चक्षे ॥ ममतु मतु मतंगं स्मेर तारुण्य घूर्णन् मदकल मदराक्षी नीवि मोक्षोहि मोक्षः ॥ १ ॥"

इससे हम तो घर बाहरके किसीकी न मानेंगे संसार

की क्या है सब मूर्खों से भरा हुआहै जो संसारी गंडकों के कहनेहो पर चलें तौ एक दिनकेही होजांय इस लिये चाहै कोई बुरा मानों या भला हम तौ अपनी प्राण प्यारी सुकुमारी हुस्ना को अवश्यही बुलावैंगे हुस्ना बिन हमारे ब्याह काहे का एक सोग ठहरा हमारादम तौ उसीके साथहै। इस कारण, चाहैं रूठैं देवी देवता चाहै रूठि जाउ भगवान। बिना हुस्नाके चरण पधारे नाहिं मेरौ कल्यान ॥ १ ॥

इस देव बाणी को सुन सम्पूर्ण वैष्णव बिचारे शर्मके के मारे चुपके से उठ गये चूं तक न करी पीछे इन सब स्वरूपोंने दृढ़ बिचार कर बेश्याओंके बुलाने की तयारी की निदान काशी सुखरासी की हुस्ना तथा तोखी आदि बार बधुओं और लखनऊ आनन्ददऊ के कत्थकों को जिस भांति निमंत्रण पत्र पीले चावलों सहित भेजे गये उसकी बिधि यह है ॥

कंकोत्री अर्थात् चिट्ठी।

"लिखित कंकोत्री गुपाल भांड़ भडुवन कों हुस्ना समेत आय पावन हमें कीजिये। दीजिये दरस जासों मनमें आनन्द होय, तोखी संग आवै तौ अरज मेरी कीजिये मैंतौ करूं आस सदा चरनन को दास तेरो कीजै न निरास खबर बेगि मेरी लीजिये। अरज है गुपाल लाल भ्रात बाल कृष्णजू की आइ के मथुरा में बेगि स्वर्गबास दीजिये ॥ १ ॥

जब यह कंकोत्री काशी पहुंची तब बेश्यायोंने भक्तों की पत्री बांचके यों बिचार किया "बांचिके कंकोत्री बिचार कियो हुल्लाने कत्थक दीन कालिका और बिन्दा दीन आवैंगे। तोखीने कहो बहन हम जायके करेंगे कहा वे तो हैं जनाने हम उनमें कहा पावैंगे। उनके तो कुलमें सदामें है रीति यही आप संग नाचें और हमहूं को नचावैंगे। आप साज बांध तशरीफ आगेले चलो, हम का उन दिमानेनमें इज्जत गमावैंगे" ॥ १ ॥

जब इस भांति तोखी ने रुखाई से इन्कार कर दिया तब हुल्ला अपने सब बीरुभत्तों को ले ताइफे को साज बाज मथुरा पधारी उसका आगमन जान विरहवत्र-स्थित गुसांईं जी की जानमें जान आई प्रसन्न हो बोले क्या जीवनप्राण आई सो बड़े साजबाज और ठाटबाट से आगेंनीकर हार्दिक प्रेम और भक्ति से अर्घपाद्य कर शुभ मुहूर्त्त दिखाय मन्दिर में पधराय लाये और एकांत में बिराजमान कर यों स्तुति करनेलगे कि हे मनोहारि भक्तोपकारि, सिन्धुदुलारि, सुशीलप्रिये आपकी इस अनन्य दीनदयालुता और अद्वितीय परम कृपालुताका मैं बड़ा कृतज्ञ हुआ जो आपने पधारकर मुझ दीनहीनको कृतार्थ किया—आपकी पालन, स्थिति, संहार तीनों शक्तियों का स्मरणकर ज्ञात होता है कि तुम साक्षात् नगर कोटवाली वा हिंगलाजवाली वा धौरागढ़वाली वा कैलाशदेवी हो, आपकी न्यायपरता इससे स्पष्ट विदित होती है आप भक्तों की भक्त्यानुसार उन्हें फल देती हो, मेरे मौसेरे भाई ने आप की शरण ली थी और चरण स्पर्श करिके कृतकृत्य हुयेथे सो आपने उनपर ऐसी कृपाकी कि वे बिलकुल ऋषि होगयेहैं और उन्होंने इन्द्रियोंको ऐसा

दमन किया है कि उनकी पौरुषेन्द्रिय जन्म पर्य्यन्त प्रवल होनी कठिन दीख पड़ती है, अब सहस्त्रों गोलोकवासी वियोगी देवी जीव अंगीकारार्थ आशा लगाये आवत हैं पर सब निराशही फिरि जाते हैं। सच्चे भक्त को आपने इस कमाल दरजे पर पहुंचा दिया, आप ऐसी शक्तिमान शक्ति हो आपकी जय होय, आपने कपटी बेदालबूदम खल विलायती गंडक का अपने मठ में निज पार्षदों से "पाद्यम्, पाद्यम्" मंत्र से कैसा अद्भुत अभिषेक कराया कि उसके पूर्ण भाग्यवानी का स्मारकचिन्ह "खल्वाट" उत्पन्न हो गया, धन्य हो आप की तनिक दृष्टि से विचारे का दरिद्र पार होगया, आप ऐसी दयालुहो आप की जय होय, आपने उसके साप्ताहिक नराव (क्षौर) की कठिनता लाभ सहित मिटादी, आप ऐसी लाभ दाता हो इससे आपकी जय हो, आपने उसे प्रेम पहिचान के उसका अर्चन चर्चन अर्थात् पूजन ऐसा कराया कि "कुरते का पायजामा होगया" क्यों न होय जब आप की कृपा कटाक्ष हुई तब शेष क्या रहा, आपकी जय होय·उसने अपना धर्म कर्म और धन आपकी चरण पादुकाओं में मस्तक धरके अर्पण किया आपने उसे उस्से सहस्त्रगुना महा प्रसाद दिया और उसका नाम सलेमशाही प्रिय गंडकी पुत्र सारे देशमें विख्यात कर दिया, आप ऐसी सर्ब्ब शक्तिमान हो अतएव आपकी जय होय। एवं दरोगाजी कोभी ऐसा महा प्रसाद किसी पुराने भण्डारी से दिला दिया कि वे उस बंजारेके टांडे और कंजरोंकी बरात को छोड़ नीम डालीके चँवरसे बाग छड़ी खेलते मुगल सरांयके नगारची टोलेको सीधे चले गये पर प्रजा चक्षु बिचारे अपना मुरीद अर्थात्

चेला सहित आपका धर्म मठ ढूंढ़के चले गये पर आप के दर्शन न हुये. आपकी जय होय अब मैं आपकी शरण हूं दीन जानिके बेड़ाको पार लगाना इस भांति वन्दना करिके उनके भोग रागकी तजबीज कर बाहर आये और कहने लगे जो यामें तो कोई अलौकिक जीव है सो न जाने कहा कारणसे या तुरक जातिमें प्रगट भयौ है यह तौ हमारो साक्षात अंगहै पीछें वाको यमुना स्नान कराय श्री ठाकुर जी की झांकी निरखाय ब्रह्मसम्बन्ध दे सेवामें अंगीकार कियौ पीछे लखनऊके कालिका दीन बिन्दा दीन कत्थक और आगरेकी मुन्नी जान बेश्या ये भी आय पहुंचीं।

बेटे वाले भट्ट तौ इनके आनेसे कई दिन पहिले के यहां मौजूद थे और ब्याहके मामूली टेहले होरहे थे इन ताइफों के कई दिवस पहले महाराजा धिराज गोस्वामी श्री १०८ कल्याण रायजीने अपने देश देशके सेवकों को पीले चांवल और कंकोत्री (पत्र) पठाई हुती—

(कंकोत्री)

श्री बिठ्ठल नाथो जयति

स्वस्ति श्रीमद् गोस्वामी श्री कल्याणरायजी शर्मणां स्वकीयेषु परमबैष्णवेषु हरि गुरु सेवा परायण अन्तःकरणेषु श्री २ समस्त देशके वैष्णव सब परिबारेषु सेवा शमिय तत्रास्तु अपरंच समाचार १ जानोगे जो यहां भाई ब्रजनाथजी की पञ्चो बेटी जी को बिवाह मिती फालगुण शुक्ला ११ को है लगन को दिन बड़ो शुभ है

सो तुम सब निज २ कुटुम्ब सहित मधुपुरी आओ यहां ब्याह कौ बडो ठाठ बाठ बांध्यो गयोहै हमारे लालजी ने कालिका दीन बिन्दा दीन कत्थक लखनऊ वारेन कूं (जिनने हमारे बड़े लालजी गुपाल लाल जी को ताण्डौ व नृत्य सिखायोहै) बुलाये हैं सो वे आमेंगे और काशी जी की हू कितनीक नामी २ गणिका आवेंगी अस्तु तुम जरूर २ मथुरा आयके या अलौकिक अद्वितीयोत्सव को निहार के कृतार्थ होना– यहां बड़ा महानन्द रोपा गया है–तुम हमारे सेवक हो सेवा विषें चित्त राखो ता सों अधिक राखोगे॥

किमधिकं मिती फालगुण शुदी १ सम्वत् १९४४ आगे भेटिया गिरधारी के भगवत स्मरण बांचोगे

गुरु पत्र पाय नीम वहशियों के गिरोह के गिरोह इधर उधर से अंधी टीड़ियों की तरह उठधाये और बच्चे कुच्चों की लदर पदर को लिये हुये अपने काबे शरीफ में आ पहुंचे, गिनती और शुमार उनका क्या कहैं खासा जैरामदास जी के बाड़े का लबालब खोगीरी भरत हो गया, उधर गुशांईं जी के होनहार जमाई भट्ट जी के बराती अर्थात् बेटेवाले भी तड़क फड़क से गोंछें (मूंछें) मरोड़ते सैर करते फिरते थे–महफिल बड़ी आन बान के साथ बनाई गई–निहायत उमदा रेशमी व कारचोबी के काम के चंदोऐ लगाये गये सारा मकान बाग ऐरम के नमूने पर ज़र-बफ़्त के कपड़ों से मढ़ा हुआ था बड़े चमकीले दमकीले झाड़, फानूस, हांडी लैम्प आदि

से आरास्ता किया गया था अधिक क्या कहैं बाग गुल-बकावली कहना चाहिये-जब राग रंग का समा हुआ सब बाहर भीतर के गुशांई स्वरूप व भट्ट व सेवक वैष्णव व शहरके भक्तजन तथा आहारी, व्यवहारी जमा होकर महफिल में बैठे-उस समय ये महाशय बिराजमान थे।

गोस्वामी श्रीकल्याणराय जी, गोस्वामी श्रीरमनलाल जी, गोस्वामी श्रीब्रजनाथ जी (दुलहनपितु) गोस्वामी श्रीगुपाललाल जी, गोस्वामी श्री बालकृष्णलाल (कांकरौ-लीवाले) गोस्वामी श्रीजीवनलाल जी काशीवाले, गोस्वामी श्रीमधुसूदनलाल जी, गोस्वामी श्रीगिरधरलाल जी, (दन्तबक्र जी) गोस्वामी श्रीगोकुलनाथ जी, व कन्हैयालाल जी, गोकुलवाले और लाल जी, ब्रजपाल लाल जी, व घनश्याम जी ये गुशांई स्वरूप महफिल के बीचा बीच बैठे हुये थे दूसरी ओर भट्टों के ठट्ठ बिराजमान थे, मथुरावाले स्वरूपों के निकट मथुरा के परम-प्रतिष्ठित श्रीयुत् लक्ष्मीसम्पन्न सेठ जी श्रीलालालक्ष्मण दास जी साहेब सी० एस० आई० जो गोशांई गोपाल लालजी के परम मित्र व पूर्ण भगवति भक्त हैं सुशोभित थे इनके अतिरिक्त शहरके प्रतिष्ठित और तमाशाई लोग बहुत उपस्थित थे और वह बाहरसे आये हुए "कंकोत्री आकर्षित" सेवक लोग भी इस ईदगाह में शरीक थे, भीड़ इसकदर थी जैसे गूंगा ज़ाहरपीर और मसानी माता की जात में होती है॥
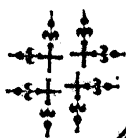
मेरे बापदादोंने भी बहुतसे सोमयज्ञ ऐसेही कियेथे जिस लिये इस देश हतैषी सभा का प्रेसीडेन्ट बनाया गया हूं जो मेरे भाई देश हतैषी बैठे हुये हैं उनके सामने मैं बहुत बिलम्ब न करूंगा, काशी बासिनी बीबियें व कथ्यक, भडुये; दलाल कुटने आदि जो यहां उपस्थित हैं उनका उपदेश सुनिये औ इस लोकको बनाइये जिसमें कान ठढ़े हों ॥ अब सब कान ठढ़े करके सुनने लगे बीबी हुस्ना गाने लगी ॥

अब काशीवाली हुस्ना वेश्या नाचने खड़ी हुई और ठुमकी जारी किया उस्ताद जी (रामकरै बुखार आवे) की सारंगीकी छेड़से अजब तरहकी तान निकली जिसे रंडी ने सुरीले स्वर से यों गाया ।

ठुमरी ।

बनिगये कृष्ण धूर्त्त बटमारी ॥ टेक ॥ एक पुत्र को कृष्ण बनायो एक को राधा प्यारी ॥ मीठी मीठी बानी बोलैं बांधे बगल कटारी ॥ सखा बने सब वेई छलिया छल से रहे पुकारी ॥ कहैं मुक्ति तुमरी हुइ जैहै मानों बात हमारी ॥ धनदौलत सब को हरलेवें देंय मोहनी डारी ॥ ओजो बनि गये कृष्ण धूर्त्त बटमारी ॥ १ ॥

यह ठुमरी सुनतेही सब गोसांइयों के चहरे फक् निकल आये और लगे इधर उधर झांकने, मगर उस परीपैकर के जादू जमाल व हुस्ने कमाल के सामने ऐसे मोहनी माया में दबे हुये थे कि कुछ कहने की ताब न हुई, बुद्धिमान ताड़ गये कि हां खूब चोट लगाई इतने में एक तिलकधारी ने झपट कर बी हुस्ना के कान पर होंठ रख के कहा बाई जी? माना कि तुम्हारी इनकी गहरी दोस्ती है और हँसी मज़ाक दिल्लगी में "तूजी पैजार" तक है मगर यहां चौड़े दहाड़े भरी महफिल में तुम्हें इनकी कलई ऐसी भंग करनी न चाहिये देखो? बिचारे शर्म के मारे नीची गर्दनकर गये हैं, बाई जी? तमाशबीनों की माई जी? हमें अपने भाई जी की कसम, इनकी यहां बड़ी प्रतिष्ठा है और इस समय सारे शहरके छोटे बड़े आदमी जो इन को परमेश्वर का भी ताऊ और बाबा आदम के भी किबले पीर समझते हैं और सब पढ़े लिखे आलिम फ़ाज़िल आक़िल ज़हीन फ़हीम हैं कोई बछिया के बाबा व पड़ा के मौसा तो है ही नहीं जो कुछ समझें नहीं ये सब आड़ी टेड़ी जानते हैं, ढके दबे नुक़ते पहँचानते हैं, पेचीदा मुअम्मे (गूढ़ाशय) हल्कर के हवामें गांठ बांधने तकके दमभरते हैं, इससे आप इन पर कुछ लान तान न करो तुम को तो इनकी खैर ख़्वाही करनी चाहिये नकि आप लगीं बेभाव की चोटें लगाने और

हक्कानी सुनाने, क्या तुम्हें यह चाहिये कि "उसीके पग परी, उसीका सिर" जो ऐसा है तो हम आप के इलम और रूप को क्या करेंगे "जलै ऐसा सोना जिससे कान टूटै" बीबी साहब ? "सोने की कटारी पेटमें नहीं मारी जाती" इससे मेहर्बानी करके कोई शाइस्ताचीज गाइये, इतना सुन रंडी ने धीरे से कहा उंः हूं "मेंडकी रा जुकाम पैदा शुद" इज्जत ! इज्जत !! हमारे गाने से छिनाल प्रतिष्ठा नें दीमक लगती है—पितिस्टा, पी, पी, या खुदा पितिस, तोबाः तोबाः कैसा गंदा लफ़ज़ है कि जुबान से अदाही नहीं होता, प्रिति, प्रिति, प्रतिष्ठा तो अगर कोई रईस हो साहूकार हो भला आदमी हो उसकी घटै तो कुछ हर्ज भी है और रहे ये सो ये जैसे हम वैसे ये जैसे हमारा काम नाचना गाना मांग पट्टी से रहना है, वैसा इनका भी काम कहीं २ नांचना गाना, और हमेशेः तेल, फुलेल में रेलपेल मांग पट्टी बेंदा बेंदी सुरमा काजल से चटक मटक चमक चांदनी बना रहना है-रहे चेले चांटी जो इनके यहां हजारों फँस रहे हैं वैसे हम लोगों के भी सैकड़ों पट्ठे कड़क्का में बन्द रहते हैं बस सब तरह से बराबर हैं न ये हम से कम न हम इन से जियादे-कांटे की तोल राई घटै न तिल बढ़े एक बेलके तूमरा और एक थैली के बट्टा हैं बस सांपों के सांपहो महमान मोंठ से मोंठ की क्या बड़ाई ये तो ठठेरे ठठेरे पलटाई ठहरी इसमें मुई प-

रतिष्ठा खरतिष्ठा को मानो का कौन तेंमद् मैला होता है, अजी मैं किसी के बाबा जान बांके पठान की लौंडी या गुलाम तो हूंही नहीं जो दब के अपना नाम डुबाऊं मैं ने तो बड़े बड़े शाहज़ादे नव्वाबजादों की महिफिलों में गाया है तौ भी अपनी खुशी का ही चीज गाई है पर खैर क्या मुज़ाका है अब के पूरी पूरी सच्ची सच्चीही कैफियत गाऊं चाहे कुछ हो बहुत करेंगे मूं बना लेंगे हद है "भेड़ की लात घोंटू तक" मगर रास्त रास्त कहने में कोई बुराई नहींहै सच कहना खुदाकी रज़ा है क्योंकि "रास्ती मूजिबे रज़ाय खुदास्त । कसनदीदम कि गुमशुदज़ रहेरास्त" ॥ फिर यह गाया-तारीफ कलियुग।

ख्याल ।

नहीं मानता हूं मैं वेद को मेराहै वो कलियुग नाम ।
सतयुग द्वापर त्रेता तीनों ये मेरे हैं सुनो गुलाम ॥टे०॥
सत्य बचन जो बोले मुख से उसका नहीं ठिकाना है ।
जहां जाय वो मारा जावै अब तो मेरा जमाना है ॥
नीति धर्म जो कोई करता उसको मुझे सताना है ।
तोड़ दूं उसके वृत्त कूं देखो बैठा मेरा थाना है ॥
शेर—धर्म मेरा है ओ उलटा देखलो करके विचार ।
जो करै अन्याय उसको न्याय सब कहतेहैं यार ॥
है वही दुश्मन मेरा जो सच्च कहता है पुकार ।
काटता मैं शीस उसका मार के खंजर कटार ॥
सभा बहुत भारी है मेरी और बड़ा संग मेरे लाम ।
सतयुग त्रेता द्वापर० ॥१॥

द्वन्द मचा रक्खा है मैंने और दिया रिस्ते को तोड़।
इश्क सगी चाचीसे किया वो और दिया नातेकोछोड़॥
करता हूं मैं जो मन भाया दिया सकलकरमोंको बोड़।
धर्म को लूला लंगड़ा करके डाली गर्दन तोड़ मड़ोर॥
ले—बहू रानी का रखना यही दिल में समाई है।
नहीं कुछ लाजहै मुझको शर्म दिलको न भाईहै॥
कपट एक मित्र है मेरा उसी से आशनाई है।
उसी से राज है मेरा सभा मेरी सवाई है॥
मैं राजा कलियुग हूं मेरे कपट छलके हैं भरे गुदाम।
सतयुग त्रेता द्वापर० ॥२॥

पाखंडी जो पास बैठते हां में हां करते हैं कमाल।
जोर से उनके जोर है मेरा ठगता हूं लोगों का माल॥
मैं चाकर रखता हूं उसी को जो ना खोले मेरा हाल।
भेद हमारा गुप्त रक्खै लिये रहै कंधे पर जाल॥
शेर—है सभा छल की भरी मेरी जो मेरे पास है।
फांसने को पक्षियों का जाल येही खास है॥
बांध दी कंठी वो जिसके हो गया बस दास है।
फस गया आके वही जिसको मेरा बिश्वास है॥
धोय २ नित चरण वो पीता अर्पण करता धन औधाम।
सतयुग त्रेता द्वापर० ॥३॥

कपट रूप राधा औ मैंने लिया कृष्ण का है औतार।
कटिमें कछनी हाथमें बंशी मोरमुकुट लिया सरपर धार॥
आन बनो राधाजी तुम भी कपट रूप करके सिंगार।
नाच कूद कर भाव बताके बस में कर लो सब संसार॥
शैर—भ्रष्ट सब संसारको करदो मेरी इस बातको मानो।
मिटा दो नीति का रस्ता सबोंको लोभसे सानो॥
जो चलते बेद मारग पर उन्हें शत्रू मेरा जानो।

करो बेहोश तुम उनको वो छलसे मारके बानो ॥
कहैं बिलाकट साहब यारो झूंठ नहीं कहता हूं कलाम।
सतयुग त्रेता द्वापर तीनों ये मेरे हैं सुनो गुलाम ॥५॥

दोहा।

कलियुगने अवतार ले, जाल कियो जग आद।
मिथ्या राधा कृष्ण बन, नचे हैदरा बाद ॥ १ ॥
सजत रास की राति में, आनन्द रूप रसाल।
बाल कृष्ण राधे बनी, चुम्बन करत गुपाल ॥ २ ॥
प्यारी जू के मन बस्यौ, प्यारो प्रिय गोपाल।
ऋतु आसा प्यासा लगी, चली कुंजमें बाल ॥ ३ ॥
प्यारे प्रिय गोपालने, कुच पर डास्यौ हाथ।
प्यारी परम प्रवीनके, आंनद उरन समात ॥ ४ ॥
प्यारी प्रिय गोपालने, लपकि लपेटी अंग।
प्यारी परम पुनीलके, मन अति बाढ्यौ रंग ॥ ५ ॥
रानी प्रिय प्यारी बन्यौं, प्यारो बन्यौं गुपाल।
दोनों ऋतुक्रीड़ाकरें, गतराडेन की चाल ॥ ६ ॥

हुस्न की खान हुस्ना जीने जो ये गाया तो सुन कर ऊपर की दम ऊपर नीचे का नीचे-कुछ कहते न बना महफिलकी सारी खलकत हसी की मारी लोट २ गई बहुतेरे भले आदमी मुंहमें रूमाल डाल २ यानके थान उतार गये-आखिर बीबी साहबको बिठलाया गया कि माफ कीजिये आपके पीछहीं हैं-आप अपनी रोजी क्या खोती है हमारी भी रोजी खोने आई है-पीछे आगरे वाली दूसरी रण्डी मुन्नी जान खड़ी हुई और गाने लगी ॥

ठुमरी—ऐसे जलैया जी के मिले ॥ टेक ॥

साल दुसालाकी सारन जानें कम्बल ओढ़े बरातीचले ढाल तरवरिया बांध न जानें मूसर लिये अगाड़ी खड़े। रण्डी पतुरिया की सार न जानें लौंडे को लेके कुठरिया चले ॥ घरको बहुरिया रोवत डोलै काकी निगोड़ी के फंदे परे। देखोरे लोगो या अचरज कूं घरमें कुकर्म करे॥ ऐसे जलैया जी के मिले ॥

इस अनोखे राग से जब बी मुन्नी जानने महफिलमें हुई मचाई तो लोगोंकी हक्काबक्की और भी ज्यादा बढ़ी इतनेमें समधी साहबके खिमाई काका बोले वाह साहब वाह! नकसाहै तुम्हारो झलसा रह गयो-तुम भली हो- पर अब तनिक हमारी सुपैदी कीहू कछू लाज राखो-जो अब चटकीली सी कोऊ गारी गावो-इस लाल बुझक्कड़ फक्कड़की फरमाइससे रण्डी साहबने एक गाली गाई--

उत्तम कुलमें जन्म ले पायो धन अरु मान। सीख्यो न्योग कराइबो तजि कुलको अभिमान॥ तजि कुलको अभिमान भ्रातको पती बनायो। बालकृष्ण सो पुत्रगोद ले दागलगायो॥ कीनों कुनाम सब जातमें उदर गिरावत फिरत नित। सब जात पात घर छोड़ के बैठी यमुना निकट तट॥

इसको सुनते ही सब स्वरूपोंकी अक्ल चकराई, सोचने लगे देखो रांड़ ने कैसी धुरपदकी थाह सुनाई, सब ने शर्मके मारे गर्दनें झुकाईं, वैष्णवों ने आपसमें कहा कि देखो इनने कैसी अपनी फजीहत कराई, एक मसखरा बोल उठे कि धन्य री माई मुन्नीबाई, बड़े भाग्यसे

तू यहां आई, इनकी अब सफल हुई कमाई, तमाशबी- नों ने जीते जी मुक्ति पाई, है तू किसी अगले जन्म के तिलकधारीकी जाई, तैंने फेरी धर्म दुहाई, इनकी सच्ची भागवत सुनाई, ये बहुतही करत अकल अंधनकी ठगाई, तैंनें निज यश जग फैलाई, तेरी जै करै ज्वालामाई- इतने में एक दागदगीले चिलमची त्रिधारा जी को वायभकने लिया तौ नीले पीले हो लगे हैरान तूरान बकने बोले—ओजी बीबीजी बाईजी बी मुन्नी ? ऐसा क्या तैंनें इन्हें निरा घूराही मुक़र्रर कर लिया जो लगी इले पै इले डालने। छी, छीः वेढब झड़ी लगाई, हुस्ना ने तौ अपना हुस्न कुवा दिखलाया ही था पर तैंने उसकी भी करतूत के जीत लिया क्यों न हो "जैसी सहो, वैसीमहो" "धोबिन सों का तेलिन घाटि, वापै मोंगरा उसपर लाठि" हुस्ना ने तौ ज़रा नीम ही डालीथी मगर तैंने महल सतखंडाही बना दिया, अब तुम्हें अपने रज्ज़ाक की क़सम माफ करो, भला तुम्हें अपने इन खलीफा उस्ताद जी के पायजामे की क़समहै जो कुछ बोलो, तुमको इन गोसांइयों ने अपने बाप दादों का नाम नवी साहब की मसजिद और कुतुबकी लाठसेभीऊंचा बढ़ाने, और अपनीइज्जत आबरू कमाने के बुलाया था या अपनी इज्जत गंवाने को आप महा लक्ष्मियों की पधरावनी की थी बस अब आपके सब्ज कदम दुख गये होंगे लिहाजा तशरीफ रखियै और जुबान पाकको अब तकलीफ न दीजियै न जानें अब के क्या सितम करोगी-इतने में महफिल का सारा मकान गूंज उठा-बेटे वालेभी हैरत में मुग्त बने इधर उधर अपने गैरत दार समधियों की सूरतकी पुर कदूरत सी

देखने लगे बी मुन्नी जान तेवरी चढ़ाके नाक भों सकोड़के लचके के साथ बैठ गई इस सूनसानके वक्तमें लोगों को अच्छा मौका बात चीतका मिला किसी ने रण्डियों की चर्बै जुबानीकी तारीफकी किसीने उनकी सोखीकी शिकायतकी, किसीने लाइन्तिहा मलामतदी कोई बोला कि या किस्मत हमारे गुरूजी का जीवन सुधर गया बाह लड़किनी के बिबाह में खूब लोगों को आंखे सिकांई अब हम इनके चेला हैं ये हमारे गुरू हैं इनसो कहा कहें अब हमारी कौन गति होगी इसका भेदनहीं जान सकते बालकपन की नादानी के दिनों में ही घर वालों ने हमें इनके जालमें फसा दिया उसी दिन से हमने तन मन धन इन ठगियों के हवाले किया अब जो हम इन्हें बुरा भला कहैं तो दुनियां वाले प्राण लेंगे कि अमुक वहिरमुख होगया नास्तिक बन गया गुरुओं की निन्दा करता है पूरण पुरुषोत्तमों की बुराई करता है पर कोई अन्धा यह नहीं देखता कि गुरू क्या बस्तु होता है और गुरु किस मतलब और लालच से करते हैं और गुरु का क्या लक्षण है अज्ञानता से कुछ दिखलाई नहीं देता न बालकपन से विद्या पढ़ी न शास्त्रावलोकन किया न संसारी हवाओं का भेदजाना जिससे कुछ ज्ञान होता जन्म भर सी बल्लभ सी वल्लभ का कलमा गाते और जैराज ! जैराज ! डकराते अपना जमारा खोया इन बहुरूपिया महाराजोंने हमारासर्वस्वनष्ट किया जिसका ध्यान करनेसे पत्थरकाहिया और बज्रका जिया भी दाड़िम सा दरकता है न मालुम कितनी चौरासी योनि भुगतते २ पुण्य प्रभाओंसे यह मनुष्य देही मोक्षादि सर्वार्थ साधक प्राप्त हुई थी और भगवद्रूप

जानने और हरिस्मरण करने का समयपाया था सो हा शोक ! इन जालियों ने यह जन्म वृथा भ्रष्ट कर नष्ट करदिया अब हमारी वह दशाहै कि जैसे किसी सौजन्मके दरिद्री को सत्रोजित किसी सर्वार्थ दायक स्यमन्तक मणि बड़ी कठिनता से मिले और उसे कोई बधिक लुटेरा अपनी दुष्टता और मायामें मोगा बनाकर मणि को तो छीन ले और उस अनाथ दरिद्री को भाकसीमें गिरा देवे हाय ! हाय ! इन धूर्तों ने मेरा सर्बस्व छीन मुझे दीन दुनियांसे यों खो दिया जैसे पुरानी कहावत मशहूर कि एक अंधेर नगरी और चौपट्ट राजाके राज्य में एक भटियारी ने अपनी सरांय में एक भाकसी जिसमें अष्ट प्रहर अग्नि दहका करती थी बना रक्खी थी और उसपर सुनहरी पलंग जो कच्चे सूत से बुन दिया जाता था बिछा कर उसके ऊपर निहायत कोमल २ मखमली गद्दे बिछा देती थी जब मुसाफिर उस इन्द्रासन सम पलंगपर लेटते तुरन्त नीचे भाकसी में प्राण गमातेथे और उनका मालमता भटियारी के हाथ आता था सो अपसोस ठीक इसी भांति इन छलियों ने मुझे नाश में मिलाया मैं ने जो कुछ धन दौलत इन को दी न उसका पछतावा और इन्होंने जो दुष्ट कर्म स्त्रियादिकन के संग कर उनका धर्म कर्म बिगाड़ उन्हें खराब किया न उसका कुछ बिचार पर रोना तो मुझे इस बात का है कि इन्होंने मेरा परलोक बिगाड़ दिया और मुझे गुमराह कर दिया और केवल एक दो कोही नहीं बिचारे लाखों मनुष्यों को गुमराह कर उनकी धर्म हत्याका भार अपनी गर्दन पर लिया है और रात दिन लेतेहैं हाय जब ये खुद काम क्रोध लोभ मोहमें फसकर

महान् बिषयाशक्त हो रहे हैं और अत्यन्त घोर कुकर्मों में लिप्त हैं वह औरों को क्या सन्मार्ग बतावेंगे कीचड़ में आप समाय। हुआ मनुष्य दूसरे को क्या निकाल सकता है लोग परमेश्वर का मार्ग पाने ही को गुरु करते हैं मुक्ति मार्ग की राह बताने वाला गुरू है बस इसी लालसा से भोले लोग इन छलियों को अपना सर्बस्व अर्थात् रुपया पैसा माल असबाब और लड़के लड़की बहू बहन बेटी आदि भेंट करते हैं पर यह नहीं बिचारते कि ये क्या हैं और इनके आचरण कैसे हैं और ये खुद क्या जप तप तरने तारने वाला करते हैं कहा है—

"गुरु कीजिये जान, पानी पीजिये छान ॥

गुरु तो ऐसा चाहिये जस सिकली गढ़ होय ।
बहुत दिनन का मोरचा पलमें डारै खोय ॥१॥

और जो बेश्याओं के खुद चेले होरहे हैं वह गुरू चेलोंका क्या भलाकर सकते हैं-कहावतः—

अबलाके बस निर्बल जोई ताहि सामरथ कहै न कोई ।

(जिसका हृदय अशुद्ध है उसका सब काम बिरुद्ध है) ॥

कामी और दुराचारी गुरु आप भी नर्क बासी बनते हैं और अपने चेलों को भी अपना प्रतिवासी पड़ोसी बनाते हैं ॥ कहावत ।

कामी गुरू लिये निज चेला, गिरत नर्क में ठेलमठेला ।

दोहा ।

कामी गुरू है नीच अति, ताहि न दीजै दान ।
कुटुम्ब सहित नरके चला, संग शिष्य जजमान ॥

चौपाई।

गुरुशिष अंध बधिर समलेखा, एकनसुनैं एक नहिंदेखा।
हरै शिष्यधन शोक न हरई, सो गुरु घोरनर्क महँ परई॥
मातुपिता बालकन्ह पढ़ावैं, उदरभरे सोइ धरमसिखावैं।

इस प्रकार के गुरूसाक्षात् ये हैं, इनकी ठगई भली भांति परमेश्वर ने मेरे अन्तःकरण में प्रकाश करदी इन के समस्त पंथी ग्रन्थ झूठ प्रपञ्च छल कपट, ठगई और लूटनेपाटने और लोगोंकी आंखोंमें धूल झोंक चीरहरन करने आदि पाखण्डों युक्त पाप के पोखरे हैं जिस किसी आंख के अंधे गांठ के पूरे अकल के अधूरे ने पढ़े और वह मोगा बना बस फिर तौ ऐसा एड़ी से चोटी तक मुड़ा कि दीन और दुनियां दोनों से गया इनके जाल जो इन्हों ने अपने ग्रन्थों में भोले कपोतों के बन्धनार्थ रचे हैं प्रशंसनीय हैं, उनके देखनेसे और न्याय दृष्टि से विचार करने से ऐसा कौन कठोर भारतीय जन व अन्य देशवासी होगा जो अपने जी में त्राहि त्राहि का आर्तनाद कर इन लोगों के असभ्य दुराचरण पर हाथ न मलेगा, कोई नहीं कह सकता कि दुनियां भर में और भी कोई दूसरा ऐसा मज़हब व फिरका है जिसने अपने पंथी ग्रन्थों में मूढ़ों से मुंडनार्थ और अपने ऐश आराम करने के लिये जैनरल आर्डर लिख रक्खे हों, हा शोक! हाकष्ट! हाखेद! हाहन्त! हादुःखहाक्लेश! हाआपत्ति! हा घृणा! देखो ब्रह्म सम्बन्ध की बाबत मूल श्लोक के मंत्र की गोकुल नाथ जी ने कैसी उत्तम टीका की है।

"तस्मादादौ सोपभोगात्पूर्वमेव सर्व्वं वस्तुपदेन भार्या पुत्रादीनामपि समर्पणांकर्त्तव्यं विवाहा-

नंतरं सोपभोगी सर्वकार्ये सर्वकार्यानिमित्तं तत्तत्कार्येपि भोगि वस्तु समर्पणं कार्यं समर्पणं कृत्वा। पश्चात्तानि तानि कार्याणि कर्तव्यानीत्यर्थ" ॥१॥

(अर्थ)—"अपने भोगने के पहले अपनी बिवाहिता स्त्री (गुसांई जी महाराज का) सौंपनी और अपने बेटा बेटी, बहन, भानजी वगैरह भी समर्पण कर देना, बिवाह के पश्चात् अपने भोग कर्म के पहले (गुसांई जी को) अर्पण करै, इसके बाद अपने काम में लावै"

हाय! हाय!! हाय!!! अरेरेरेरेरेरे धिक् धिक् धिक्, छीः! छीः!! छीः!!! कैसा गज़ब मचा रक्खाहै। दीन भारत की जीर्ण नाव को डुबा देने का कैसा उद्योग किया है, निर्मल स्वच्छ देशको व्यभिचार सागर बनाने का कैसा अद्भुत विज्ञापन दे रक्खा है, परन्तु "कालस्य कुटिलागतिः" न प्रजा इस घोरमघार असभ्यता बर्द्धक अनर्थ पर दृष्टि डालती है न राजा इसका आन्दोलन करता है। इन बातों के सिवाय अनेक प्रकार के गुटके बना रक्खे हैं जिनमें अपने शिष्यों को नसीहत की है कि हमारे ग्रन्थों को श्रद्धा पूर्वक माना, किसी अन्य मार्गी से कुछ संभाषण न करो, हम परमेश्वर हैं, यदि कोई हमारे विरुद्ध कहै (तात्पर्य्य पोल खोलै) उसे महा पापी और निन्दक समझके उसका मुंह न देखौ हमारा शिष्य हो के किसी अन्य शास्त्र वा अन्य मत के पुस्तक देखेगा वहिर्मुख समझा जायगा जो कोई अपनी स्त्री आदि के अर्पण करने में ग्लानि वा भ्रम करैगा महा पापी गिना जायगा, आदि—बस ये सब प्रबन्ध इस लिये रचे हैं कि कोई पढ़े लिखे शिष्य सत्यधर्म के

ग्रन्थ और शास्त्र तथा वैदिक विषयों को न देखें और हमारा भंडा न फूटै और पोल न खुलजाय, सब संसार अंधे का अंधा बना रहै, और हम इसी तरह मूर्खों का सर्वस्व छीन छीन चैन करैं और मौज उड़ावैं, परमेश्वर का कुछ खौफ नहीं परमेश्वर हमहीं हैं सब को धता—इससे भी और क्या आनन्द होगा कि काठ के बोंगे मेहनत करते हैं मशक्कत करते हैं अनेक प्रकार के दुःख उठाकर धूप, छांह, मेह शरदी, गरमी सहकर रुपया कमाते हैं और आप खुद उससे अधिक भोग नहीं भोगते यहां तक कि बहुत से तो खाने पीने तक में संकोच करते हैं और उसको लेकर मोहामोक्ष के जगड़वाल में हमारे पास आते हैं और हम उनसे सब रखवा लेते हैं और अपने भोग में लाते हैं और गुलछर्रें उड़ाते हैं इससे अधिक और क्या स्वर्ग होगा कि, मोंगे अपनी नवीन नवीन तरुण मृगनयनी स्त्रियों को अछूती अमनियां लाकर हमारे सुपुर्द करते हैं और हम उन अप्सराओं से मनमानी कलोलें करते हैं और उनके घर वाले बजाय ग्लानि के बड़े आनन्दित होकर अपने को धन्य २ कहते हैं, वाह वाह "चुपड़ी और भर भर पेट" रहा नर्क स्वर्ग उसकी कुछ खबर नहीं अगर नहींहैं तो कुछ बात ही नहीं और जो नर्क आदिक हैं तो कुछ परवाह नहीं वहां की वहां देखी जावेगी—

"यहां तौ चैन ये गुजरती है, आक़बत की खुदाजाने"
"चाख्यौ चाहै प्रेम रस, तौ जोखिम क्यों न सहै"

हा दुर्गति! दुर्दांत अविद्या ने लोगों को कैसा बजरबट्टू बना रक्खा है कि जैसे ये चाहे लुढ़कते फिरते हैं, लोगों ने इन्हें श्री कृष्णचन्द्र आनन्द कन्द मान छोड़ा

है, पर यह भेद नहीं पाया जाता कि ये श्री कृष्ण उन घोंघों को किस प्रकार दिखलाई पड़ते हैं, श्री कृष्ण के गुण और लक्षण न जानें इन में कौन से हैं ? श्री कृष्ण-चन्द्रने तौ एक उँगली पर गिरिराज पर्वत को उठायाथा और दावानलअग्निको पानकर लिया था जोकि सैकड़ों कोस तक जंगल में दहक रही थी, सो क्या कोई गुसांई पहाड़ तौ दूर रहा एक बारह मन के टुकड़े को बजाय बिचारी उँगली के खोपड़ी पर सम्हार सकताहै, और लाखों मन अग्नि के बदले एक सेर भी अंगारों की ब्यालू या कलेवा कर सकते हैं, फिर खेद कि लोग कृष्ण, कृष्ण, सी कृष्ण, सी किसन इन्हें बताते हैं क्या बहुत सी मिथ्या गोपीरूप स्त्रियों का पातिव्रत भ्रष्ट करना ही एक कृष्ण धर्महै ? कृष्ण ने तौ कुल गोपियों को दुर्वासा ऋषिके पासजातेवक्त यमुनाजीमें होके सीधे पैदल भेज दिया था भला ये गैर को तो क्या आपही किसी गहरे से नाले में जावें देखें हुच्च हुच्च करके डूबते हैं या सूखे पार पड़ते हैं, बस या तो कोई कृष्ण शक्ति दिखावें नहीं तो इस ठगई और मिथ्या कृष्णता से हाथ खींचें जिस से लोग धन धर्म से नष्ट भ्रष्ट न हों और भारत की दशा सुधरै और लोगों का धन उन्नति कार्यों में व्यय हो कर राजा प्रजा सब के सुख का हेतु हो, देखिये श्री कृष्णचन्द्र ने गीता जी के सोलहवें अध्याय में दुराचारी और पाखण्डी लोगों की निस्बत क्या अच्छा लिखा है श्लोक ॥

कामामाश्रित्यदुःपूरं दम्भमानमदान्विताः ।
मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान् प्रवर्त्तन्तेशुचिव्रताः॥

१०॥ चिन्तामपरिमेयांच प्रलयांतामुपाश्रि-
ताः। कामोपभोगपरमा एतावदितिनिश्चि-
ताः ॥११॥ आशापाशशतैर्वद्धाः कामक्रोध-
परायणाः। ईहन्तेकामभोगार्थ मन्यायेनार्थसं-
चयान् ॥१२॥ आढ्योऽभिजनवानस्मि को-
न्योऽस्तिसदृशोमया। यक्ष्येदास्यामिमोदिष्य
इत्यज्ञानविमौहिताः ॥१५॥ अनेकधर्मवि-
भ्रान्ता मोहजालसमावृताः। प्रसक्ताःकाम-
भागेषु पतन्तिनरकेऽशुचौ ॥१६॥

ये सब श्लोक गीता के १६वें अध्याय के हैं।

भगवानने श्री मुख से कामी व्यभिचारियों को ऐसा दण्डनीय कहा है तिस पर ये कुछ ध्यान नहीं देते, हे परमेश्वर तेरी क्या इच्छा है ?

प्रिय पाठक गण! वह वैष्णव इस भाति धीरे२ कोने में बुड़बुड़ा रहा था कि अचानक महफिलमें एक सिपाहीने चिल्लाकर हूक मारी चुप ३! खबरदार गुल न करो फिर कत्थक लोग खड़ेहुये और पैरोंमें पनसुरियां (घुंघरू) बांधके नाचने लगे कालिकादीन नाचने लगा सुभान अल्लाः अजब तरह का नाच नाचता था जब चाहता कि सौ घुंघुरूओंमें सिर्फ एककी आवाज निकलै निन्यानवे न बजैं तो बेशक एक ही की आवाज निकलती थी क्या मजाल कि दूसरा इकार तक ले इसी कदर

सैकड़ों किस्म के करामाती ठुमके उड़ाता था फिर कालिकादीन ने अपने उस्तादी का धर्म (फर्ज) निबाहा अर्थात् हुस्ना और मुन्नीने जो लान तानकी***इनके शागिर्दों पर झाड़ी थीं उनकी कलई और शोहदपन गोसांइयोंके जतलाने और उनकी बेवफाई बतलानेके लिये उनके गाये हुये कलामों का गूढ़ाशय प्रगट किया कि ये जात ऐसी होती है धन धर्म कर्म भी हरती और नाना धिक्कार दे अपकीर्ति भी करती है इस लिये कालिकादीन ने एक टप्पा ऐसा कहा जो गोसांइयोंके लिये उपदेश से भी खाली न था॥

टप्पा।

शुभ काजको छांड़ कुकाज रचें धन यावत व्यर्थ सदा इनको। ये रांड बुलाय नचावत हैं नहिं आवत लाज जरा मन को॥ मिरदङ्ग भने धिक है धिक है सुर ताल पुछै किनको किनको। तब उत्तर रांड बतावत है धिक है धिक है इनको इनको॥ १॥

और भी गाया—"बेश्यन को नृत्य करावत हौ क्या इस बिन तुमको नहिं सरती। गुरु मात पिता की तौ पूछ नहीं पर रण्डीकी बात नहीं टरती॥ बेश्याको देत हजारन ही और घर की बहू रोवत फिरती। जब ऐसो पाप भयो जग में या कारण कांप उठी धरती"॥

और भी, कवित्त—जाई पाप इन्द्र के सहस्र जो भई हैं भग ताई पाप चन्द्रमा कलङ्क आनि छायोहै। जाई पाप राते से बराती शिशुपाल जू के ताई पाप दोनों दल माधे हाथ धर जरायो है॥ जाई पाप काली बन माली प्रति नष्ट भयो ताई पाप कीचक कूं भीम ने

नसायो है। जाई पाप रावन को मार लंक छार करी सोई पाप तुम ने खिलौना कर पायो है ॥२॥

और भी सुनो—संगही के कारण कुलीन अकुलीन होत संगही से पण्डितहू मूढ़न में गनिये। संग ही से भक्ति जन मन में अभक्ति आवै संगही से चारु ब्यभि-चार माहि सनिये॥ संगहीसे धर्मीहू अधर्मी बन बैठत हैं संगही से हानि लाभ पावत हैं बनिये। बिलाकट गुसांइन के संगही से सेठ जी हू भूल राम जनन कूं भजी राम जनिये॥ ३॥

बीजुरी सुनान बाम परम ललाम नख शिख अभिराम बय जाकी अति छोटी है। शशि के समान मुख कान लों नयन जाके बानतान मारै ऐसी चितवनहूकी खोटी है॥ अधर अरुण बंक भृकुटी कठोर कुच कच कजरारे कारे नागिन सी चोटी है। भनत बिलाकट गुसांइन के संगही से बेश्यादास जी की दांत काटी रोटी है॥४॥

इसके बाद सब ने वाह वाह की झड़ी लगाई, वहां उस समय वे बैष्णव भी बैठे थे जिन्हों ने इस गोमेध यज्ञ युत स्वयम्बर रचने के पूर्व बेश्याओं के बाबैसें हाथ जोड़ के प्रार्थना की थी कि जै राज महाराज! आप बेश्यान कों मती बुलाओ नहीं आपकी बड़ी अपकीर्त्ति होगी जब यह दशा उन्हों ने देखी बोले कि देखो कैसी धूल उड़ रही है हमने कही सो एक न मानी, अब भ-लो पुरुषन की यश फैलायो, तब एक वृद्ध बोला कि भाई जैसा जिसका संस्कार और कर्म पूर्व जन्मका होता है उसके आचरण दूसरे जन्म में भी वैसेही रहते हैं उ-त्तम कुल और घर में जन्म लेनेसे प्रकृति बदलती नहीं

जैसे उग्रसेन से तपस्वी और धार्मिक राजा के घर कंस जन्मा पर स्वभाव और आचरण वही दुष्टपने के थे इसी भांति प्रह्लाद यद्यपि हिरण्यकश्यप के घर प्रगटा तौभी अनन्य भक्त ही रहा, किसी कवि ने सत्य कहा है:—

कबित्त। प्याजकी गांठ मिहींकर पीस कपूरकी बासमें बास मिलाई। केशर के पट केऊ दिये धरि चन्दन हू की छांह सुखाई॥ ऐसे उपाय अनेक करे पर प्याज की बास वही फिरि आई। कबि ठाकुर ऐसे दुष्टन की जो टेव गई तौ कुटेव न जाई॥ १॥

पीछे कत्थक भी थक थक कर झक बक कर बैठगये तब एक बड़ीलम्बी सफेद सन की सी डाढ़ी लगाये सवा मन सूत की पाग डटाये दिवाली के अरना की तरह चिते चिताये, गर्दन में मोटी २ माला और कण्ठियों की बर्त लटकाये बड़ा नीचा जामा पहने कमर कसे मूंछों पै हाथफेरते बड़े लम्बे चौड़े ताड़वत् क़द से अली बाबा के समधीबने आगे महफ़िल में खांसते २ आये लोग चकराये कि वाह अच्छे लम्बकलम्बा दर्शन पाये पूछा फ़रीदखां जी किधर सिधाये? बोले हम महाराज के जगा हैं—फिर बांह उठाय वंशोच्चारण करने लगे॥

कबित्त—धन्य २ लक्ष्मण भट्ट जिन के गृह प्रगटे तैलङ्ग कुल तिलक बिप्रकौ सिंगार है॥ सुन्दर सरूप रूप नवन इन्हैं सबै भूप कहत कबि ठाकुर श्री नाथ जी सों प्यार हैं॥ दैवीजीव ज्यावनकूं सदा भूमि पावनकूं अभय दान देवेकों परम उदार हैं। माया मत खण्डन कूं भक्ति मत मण्डन कूं दुष्ट मुख दण्डन कूं कुल बल्लभ अवतार है॥

ज्योंहीं चक्की के पाट भाट ने यह कबित्त पूरा किया त्योंहीं एक सच्चे देशहितैषी शिष्यबरों में श्रेष्ठ उपस्थित

हो कर कहा मियां लाल बबक्कर बेग जी इन चिकने चुपड़े बघारों से क्या भारत को रहा सहा भी गारत किया चाहते हो-भाड़ में जाय तुम्हारी यह कविता और चूल्हे में पड़े यह बिरदावली-तुम से झूठे खुशामदी और मुंह चाटा गपड़कों ने तौ इन देश घातक, प्रजा नाशक, धर्म बिनाशक, पाखंडियों को प्रशंसा के बैलून में चढ़ा के देश का सत्यानाशही किया है-रे अज्ञान थे तेरी मिथ्या प्रशंसा योग्य नहीं है इनका शुभ जीवन चरित्र जो अकथ्य है उस की बानगी मैं सज्जनों की सावधानतार्थ कहता हूं जो ज्ञानी और विज्ञ पुरुष मेरे वचनपर ध्यानदेंगे अवश्य दोनों लोकका लाभ उठावेंगे और अपनेसर्वस्वको इन मूंजियोंके चुंगलसे बचावेंगे।

ऐप्यारे महफ़िलके रौनक देनेवालेलोगो टुककान लगावो।

पहले में हम्द ख़ालिक़ अरजोसमा कहूं। बाद उसके फिर में नात शहेअंबिया कहूं। गर उम्र भर भी इसको कहूं। तो भी क्या कहूं, लाजिमहै इसमें तबाको कुजुज इन्तमां कहूं। कुछ हाल धर्म का कहूं कुछ पंथका कहूं। जी चाहता है बल्लभ कुली माजरा कहूं।

ज़रा देखो क्या धर्म की गति इन्नें किई है।
तबाही से क्या उस की हालत हुई है॥

ख़बरदार ऐ क़ौम के नौनिहालो, ख़बरदार ऐ मुल्क के खुश खिसालो। ख़बरदार ऐ देश के जी कमालो, ज़रा ध्यान देकर के हालत सम्हालो॥

क०। जन्मके जनाने कुलकाने नाहिं छाने कहूं अक्लके दिमाने जात पांत सूं लजाने हैं। मथुराके बल्लभ कुल बालक मति मन्द सबै सेवा न जानें नृत्य नांच मन माने हैं॥ तबला बजाने रूप स्त्री को सजाने इश्क़ रंग में

रँगाने धूल उड़त जमाने हैं। बालकृष्णलाल और गुपाल लाल दोऊ मिल रास में नचाने रति रंग मान माने हैं ॥१॥ सुबह शाम आठों जाम रहत जनानो काम गानों रंगराग तियबानों मनमानों है। सरस सरूप रूप अतिहि अनूप ऐसे बालकृष्ण लाल जू के हउआ मन मानो है ॥ भाई गुपाल जू ने कुल में लगाई काई करन रति क्रीड़ा कों राख्यौ काम कानों है॥ कुट्टनन कौ राजा महाराजा भांड़ भडुअन कौ बेश्या को भक्त देश देशन में न छानों है ।२॥ कीनों है न नाम कछु जातिमें बिवाह बीच रंडी भांड़ भांडुआ हीजरा नचाये हैं ॥ महफ़िल सजाय बहू बेटीन पै गवाये गीत कीनी है अनीति सेवक धर्म सों हटाये हैं ॥ कहत नवरत्न जमुना निकट पै नचाई रांड़ दक्षिणा पहरावनी पै झूंठौ हठ लाये हैं। बड़ेन की न करी कानि तीरथ की न राखी आन ऐसे कर कर्म पुरखा स्वर्ग में पठायेहैं ३ एक समय मथुरा के गुसांईन कौ कुटुम्ब सब मानिकलाल सेठ जानें यात्रा पधरायौ है ॥ इधर होत रास उधर सेठसों बिलास करत बिखर गये मोती रेत यार पै ढुढ़ायौ है ॥ कहत नवरत्न सेवा सुमिरन सिंगार छोड़ नाचनेगाने को रोजगार एक उठायौ है ॥ गोसांई बंश में गुपाल लाल पंड भये बहू बेटीन कों दधिकांदे में नचायौ है ॥४॥ लौंडे और रंडी भांड़ भडुआ बिनमारे मरे बल्लभ कुल बालकन नें ऊधम उठायौ है॥ बालकृष्णलाल और गुपाललाल दोऊ मिलि राधाकृष्ण बन के रंग रास कौ दरसायौ है ॥ कहत नवरत्न ऐसी भई है न होय कबहूं जाकों मानें इष्ट ताकौ नक़ल कर नचायौ है ॥ तपकौ बल छोड़ जोड़ तोड़ सों भरे हैं पेट एसे मति मन्द दाग़ कुलकौं लगायौ

है ॥ ५ ॥ मथुरा के निवासी ब्रजबासी गोस्वामी जिनन कन्या के बिवाह काज महफिल सजआई है ॥ रुपिया लै उधार के मुनीम मक्खीलाल जी सों ऐसे शौक़ीन रंडी काशी सों बुलाई है ॥ कहत नवरत्न जस जातमें न कीनों कछु दक्षिणपहरावनी की धूर उड़वाई है। बालकृष्णलाल और गुपाललाल दोऊ तिन धर्म को छांड़ सभा रंडिन की बनाई है ॥ ६ ॥ फूके हैं हजारों के कान जो महंत जी ने जिन के शैतान अली चूना लै लगाया है। पाया है कुसंग नर्कचन्द अधमचन्द संग दुर्मति प्रपंच धर अधिक मन भाया है ॥ कहत कवि ठाकुर कमबख़्त राम बकासुर हरवक्तदास अष्ट सखा कर्मन सों पाया है॥ डंडा हाथ डुगीडुगी बटुक वोक पै बैठाय दिये कहैं लोगबाग ये कलन्दर अजब आया है ॥

जब इस तरहके धुरपद और खम्माचके जिले उस महाशयने गाये तौ सारे भोंगा भट्ट निरक्षर कुडुक झंझन पातर चाटा खुशामदी वायवैला मचाके बोले अजी तुम कौन हो कहां से तशरीफ लाये हो आप मेहर्वानी कीजियै टुक दम लीजियै तनक तौ पसीजिये जिह्वाको श्रम न दीजियै निज घरकी रास्ता लीजियै। यह टांय टांय कांय २ सुनकर मिष्टर साहबने कहा भाइयो मैं कोई रण्डी या लौंडा या भांड़ या भडुआ या ढाढ़ी या कत्थक या भाट पसारी का बाट या जगा या किसी का नकद सगा या किसी का ले भगा तौ हूहीं नहीं जो तुम डरते हो कि कुछ मांगेगा जांचेगा तौ किसके यहां बर्तन भांडे रखके इज्जत बचावेंगे सो आप इस बात से निधड़क रहो मैं किसीसे कुछ मांगने यांचनेके निमित्त नहीं आया हूं मैं तो इन बैदिक धर्माचारी तिलक

धारी (गोसांई) जनोंकी सभ्य समाजमें स्वयंवर की सभा देख अपने को सफल करनेके लिये चला आया हूं यहां साक्षात् (सागपात) पूरण पुरुषोत्तमोंकी टोलीकी टोली ढेरी की ढेरी अड्डू के अड्ंग मौजूद बिराजमान हैं पालती मारे टक टकी लगाये ध्यानावस्थितहैं सो चल कर वेदोंकी ऋचा व मंत्रावली तथा वैदिक रीत्यनुसार बिवाहके मंगलीय गान ब्राह्मणों द्वारा श्रवण करूंगा परन्तु जब मैं इस पोर्ट विलियर में अज्ञानता से घुस आया तौ यहां आके मैंने बड़े २ मंत्र शास्त्री व कर्मकाण्डी और बेद पाठिनी देखीं और बड़े २ बिलक्षण मूल मंत्र सुने उसीके माफिक मैंने भी कुछ गुण गान कियाहै आप क्यों वृथा क्रोधाग्नि कुंडमें गिर पड़ते हो अरे भाई न्याय को हाथसे क्यों जाने देते हो क्यों मोंगेबने हुए अंधी भूल भुलैया में पड़े हो लोक परलोक क्यों बिगाड़ रहे हो किसी तरह इस चन्डूखानेसे निकल कर कल्याणकी राह ढूंढ़ो परमेश्वर का भय करो भाई लोग हम किसीके निन्दक नहीं हैं हम जैसे हैं उसका बखान सुनो— ॥ कवित्त ॥

छौंना हम रसके खिलौंना राजमन्दिरनके दासनके भैया गहैया रन बनके। चाहनके चाकरहैं रैयत गरीबनके बुरीसे कहैया ना सुनैया बात कमके। साधुनके चेरे कमेरे हम रसकिनके साथीहैं सपूतनके प्रेमी पूरे पनके। कीरत बखानें हमें जानें मर्दाने सबै जानें का कादर ये जनाने जनम के॥

दैव योगसे एक सच्चा देश हितैषी बिद्वान भी वहां खड़ाथा उसने मिष्टर साहबको अपने निकट बुलाके कहा प्रियवर जै सी कृष्ण पश्चात् सच्चे देशहितैषी बोले भाई

तुम तो बड़े धर्म धुरंधर हो तुमने बहुत सत्य २ लैक्चर इस समय न्याय निरूपण का दिया वह बोले बन्धुवर देश बड़ा अंधा होरहा है न कोई भला देखता है न बुरा समझताहै अधाधुन्ध भेंड़केपीछेभेंड़, और ऊंटके दुम से ऊंट बिना देखे भाले घोरमघार दलदली कूपमें गिर रहे हैं देखो वो जो लाल २ कनकटी बुच्चे टोपे लगाये बैठे हैं वे इन महा व्यभिचार प्रचारक गोसांइयों को खुदा (ईश्वर) से भी तीन इञ्च बड़ा समझते हैं और कान फुकाय २ तन मन धन सब भाड़के झोंककी नाईं इन गोसांइयोंकी गोलक में गड़प २ झोंकते हैं ।

इतना श्रवण कर सच्चे देश हितैषी पूछने लगे कि महाराज जब इन महात्माओंके ए चरित्र हैं तो इन की स्त्रियादिक भी अवश्य महात्मा होंगी क्योंकि यह दस्तूर की बात है कि सोहबत का असर अवश्य प्राप्त होताहै इस लिये यह सम्भव नहीं कि इन मिथ्या वासुदेवोंकी असच्चरित्रता उनको सच्चरित्रा रहने दे कृपा कर इसका कुछ भेद प्रगट करिये यह सुन वह महाशय बोले मित्र वर कुछ न पूछिये इस विषयके स्मरणसे सभ्य आर्यों को मरण कासा दुःख होताहै और लज्जा हमारी वाणीको रोक कर कहतीहै 'गोपनीयं गोपनीयं२ प्रयत्नतः' पर यदि आपको सत्यके श्रवण का शौकही है तो सुनिये मैं एक रहस्य सुनाताहूं उसे समझकर सबका सारांश जानलेना देखो वो जो साम्हने बने ठने ठोड़ीसे हाथ लगाये रखियोंसे दीदारबाजी कररहे हैं और अपने तईं दूसरा इंद्र समझ रहेहैं इनका नाम गुसांईं बालकृष्ण लालहै ये गुसांईं पुरुषोत्तम लाल जी महाराज के पौत्र हैं और कांकरौली की गद्दीके टिकैतहैं इनकी माता अपने सगे

भाई यशोदानन्दको किये हुये बैठीहै और आनन्द पूर्वक निर्विघ्न युक्त अहर्निस कलोलें करतीहै इस दुर्घटना को बिलोकि गोसांई लोगोंने लोक लाजके कारण उसे जाति बहिष्कृतकर दियाहै परन्तु श्रीमान् महान् विद्वान सर्ब्ब शास्त्र बिशारद महाराजाधिराज सकल गुण खान पं० वर गोस्वामी श्री देवकीनन्दन जी महाराज काम बनबासीने उस पतिता को अपनेमें मिला लियाहै और दादी का सम्बन्ध निकाला है उनकी ऐसी काररवाई से अन्य गोसांइयों ने देवकीनन्दन जी महाराजका हुक्का पानी अपनी बिरादरी भरसे बन्दकर दिया है यहां तक कि उनके खास भाई गोपाललाल और जयदेव लाल भी अपनी सैनक रकाबी से उन्हें हाथ नहीं लगाने देतेहैं और अपना २ अपरसीठाट अलहदा २ रखतेहैं ॥

मित्र आर्य्यगण देखो आपने यह लीला बस अधिक गुप्त वार्ता अभी प्रगट करने का अवसर नहीं है "इनके यहां यह रीत है कि सात करै सतमन्ती औ नव करै कुलवन्ती,, ॥ लावनी स्त्री चरित्र।

देखो इस कलयुगकी लीला सब सज्जनदे कान सुनो।
इन गोकुलियनके युवतिनके चरित्र धरके ध्यान सुनो॥
घोड़ा वहूजी भी देखो वृजराय पतीसे नहीं डरी।
एक चौबे को कर अधिकारी मुल्क मुल्क की शैर करी॥
थे रघुनाथ पुत्र उनके उनका भी सुनलो हाल जरी।
उन्हेंभी त्यागा उनकी बहूने बन बैठी इन्दरकी परी॥
शैर—देखलो इन नारियों ने करके वो बज्जर हिया।
त्याग पति व्यभिचारिनी बन काम इन खोटा किया॥
छोड़ निज पतियोंको परपुरुषोंको धन योवन दिया।
दाग निजकुलमें लगाकर जगतमें अपयश लिया॥

और कहूं आगे अब कहानी अद्भुत कथा बखान सुनो ।
इन गोकुलियनके युवतिनके सब सज्जनदे कान सुनो ॥
पट्टा बहूजीका देखो अब चित्त धरके सुन लीजे हाल ।
चिम्मनजी को त्यागन करके खूब लुटाया घरका माल ॥
चट्टू जी महाराजको छोड़ा उनकी बहूने किया कमाल ।
खसम सगे भाईको बनाया ऐसी देखो इनी कुचाल ॥
शैर—धन्य कलियुगजी तुम्हारीहै बड़ी लीला जबर ।
खूब भारत को पछाड़ा बांध कर तुमने कमर ॥
वो जो गुरुबाहन कहाती जिनको पूजै नारि नर ।
छोड़के लज्जा शरम भाई को करबैठी वो घर ॥
बाल डुबोई अचारियों की छोड़ दई कुल कान सुनो ।
इन गोकुलियनके युवतिनके चरित्र धरके ध्यान सुनो ॥
सूरत वाले गिरधर जी को उनकी बहूजीने छोड़ा ।
अपने पतिकी प्रीत त्यागके नेह वो गैरों से जोड़ा ॥
वृजकेश पारसल चोरने किया न जोड़ पर कोड़ा ।
उनकी बहूने छोड़ उनको कुल अपना सारा बोड़ा ॥
शैर—छूट कारागार से वृजकेश जब आये वो घर ।
ब्याह दूसरा कर लिया देकर बहुतसे मालो ज़र ॥
ब्याहके करते गये कुछ रोज के पीछे वो मर ।
क्यों न चेलिनसे निकाला काम अपना हो निडर ॥
निर्लज होकर पैर पुजाते बनकर गुरू महान सुनो ।
इन गोकुलियनके युवतिनके चरित्र धरके ध्यान सुनो ॥
बहूजी चन्द्रावलीको देखो हाल कहूं सुनलो अब यार ।
गिरधरजीने करीथी नालिश पूरण सुनिये अब विस्तार ॥
पूजाका अधिकार न इसको ग्यारह इसने किये भतार ।
मैं लछमणजी काहूं भतीजा दिया अदालतमें इजहार ॥
शैर—है जड़ाया इसने पन्ना लाल अपने हार में ।

फिर लगे गिरधरजी कहने खोल मुख सरकार में ॥
है न हक व्यभिचारिनी का हिन्दु शास्त्र बिचार में ।
मुख़्तार गोपी लालने फिर यों कहा दरबार में ॥
व्यभिचारिनकाहक्क नहींहै हाकिमने किया बखानसुनो ।
इन गोकुलियनके युवतिनके चरित्र धरके ध्यान सुनो ॥
चन्द्रावली जी के गवाह थे आचारी जो परसोत्तम ।
कहा सदरआलाके सामने हलप उठाके खाई कसम ॥
हिन्दुशास्त्र को हम नहि माने परम्परासे है ये रसम ।
ग्यारह का कुछ दोष नहीं है स्त्री कर ले साठ खसम ॥
शैर--ले सफाई के गवाह यह हुकुम हाकिमने दिया ।
जीत चन्द्रावलि गई लिख फैसला देखो किया ॥
हुकुम ये सुनकर तभी गिरधर लालका धड़का हिया ।
सुनकर मुर्दे होगये ज्यों जहरका प्याला पिया ॥
जीती चन्द्रावली ढहगया गिरधरका अभिमानसुनो ।
इन गोकुलियनके युवतिनके चरित्र धरके ध्यान सुनो ॥
नहीं गोसांईं कृष्ण हैं नहीं राधा इनकी नारी हैं ॥
व्यभिचारिन हैं युवती इनकी ये लम्पट व्यभिचारी हैं ।
कोइ न फसना फन्द में इनके लंपट धूर्त लबारी हैं ।
अधिकारी गोलोकके ये नहिं कपटी बने अचारी हैं ॥
शैर--हैं खिलाते जूंठ सबको और ये मुंहका उगाल ।
बांधके दमड़ीकी कण्ठी छीन लेते हैं ये माल ॥
हैं सफा ऊपरसे ये औ चाल चलते हैं कुचाल ।
खूब ठगते चेलियों को डार कर बातों क जाल ॥
कहैं बिलाकट साहब मेरे बचन ये सत्य प्रमान सुनो ।
इन गोकुलियनके युवतिनके चरित्र धरके ध्यान सुनो ॥

क० । नारी बृजनाथकी प्रसिद्ध चंद्रावलीजी को बिधवा भये पै व्यभिचार दोष लगो है । तुरंग निवासी श्री ब्र-

जेश जी द्वारकेश को चाची संग भाष्यो जो सपूत पूत सगो है ॥ पाय संग चाची को प्रसंग पुत्र मुख तें सुन सोच जाम साहब के चित्त माहिं पगो है । दूर ब्रजनाथ जी के मन्दिर से दोऊ किये इज्जत गमाय सरमाय तब भगो है ॥१॥

लाज को न काज उर राखो कृष्ण बेटी जी ने सिन्ध से कमाय दीन्हों द्रव्यतुम्हैं जानी मैं । दरस दिखाय द्रव्य यवन नबाब हूं तें लीन्हीं बहु कीन्हों सुख आप जिंदगानी मैं ॥ चरन परस बन्द यमुना के कीन्हें हुते काम कौन खोटो कियो भाषिये सुबानी मैं । नेकहू न लाज आवै एते हू पै तुम्हैं सबै डूब क्यों न मरौ उल्लू चुल्लू भर पानी मैं ॥२॥

कोऊ गिरनारा ते फंसी है कोऊ सांचौरा ते कोई भेटिया से ये सांची बात जानी मैं । कुलटा कुकर्मनी फंसी हैं कोई भाइन तें कोई तो भतीजन तैं रमी जिंदगानी मैं ॥ बाज हू न आईं कोऊ बाजखां यवन हू तें सेवक रसोइया सब रहें अभिमानी मैं । तुमते सिवाय व्यभिचार देख्यो नारिन में डूब क्यों न मरौ उल्लू चुल्लू भर पानी मैं ॥३॥

दयानन्द सरस्वती ने वेद के प्रमाणन सों नई एक रीति मत आपने चलाई है । सुता सुत जायवे को उत्तम प्रकार येही एक दो तीन पती करो सुखदाईहै ॥ एकादश पति लों बनाय उपजावै पुत्र वेद को प्रमाण दोष दोषत न भाई है । चंद्रावली बहू जी ने ग्यारह खसम किये एती वेद रीति बश आप की मैं पाई है ॥४॥

यह वार्त्तालाप होही रहा था तब उसने कहा कि

भांड़ों का लश्कर बरसाती मेंडकों की तरह, तरह तरह की बोलियां बोलता उबलपड़ा अब लगीं तालियां बजने फटा फट्, फटा फट्—कोई किसी की घुटी खोपड़ी पर चपत का चांटा जमाता था चटाक, कोई दूसरे के सिर पर फटा बांस फटकारता था फटाक् कोई बोलता था कोई हँसता था कोई हिनहिनाहट करता गधे की रेंक रेंकने लगता—कोई म्यांऊं कोई फुस ग़रज तरह तरह के कुतूहल करते थे, इसके बाद एक सेठजी की नक़ल की जिसे देख देखनेवालों के पेट नगाड़े हो गये एक भांड़ तोंद लगा के बड़े सेठ की शक्ल बना दूसरा उस की सेठाणी।

एक भांड़ दास्तान बयान करने लगा, एक सेठ थे, सेठ बड़े मोटे ताजे जब जईफ़ी के आलम में आये तो उन की सेठाणी चल बसीं—तब सेठजी ने दूसरौ ब्याह कियौ हू सेठाणी क्या आई गिंदोड़ा की जात आई मौसम जाड़े का था इसलिये रात को एकही मांचे पै लेट लगाने लगे औरत थी जवान लेकिन बिचारे सेठजी भोले भाले कोई सतयुगके आदमी थे, समझे कि सेठाणी अभी नई है जो मैं कुछ दबाव डालूं तो शायद मर न जाय इस लिये एक कोरमें दुबके हुये कहते "सेठाणी! सेठाणी! थारी चीजवस्त मूं हाथ लगा द्यूं एं" सेठाणी कहती "भल्यांई लगाद्यो" फिर सेठ जी कहते "ना बेटी का बाप की मड़ जासी,, तूं मड़ जासी तो किस्यां होसी म्हारी गिँदोड़ी म्हे पछी कांईं करस्यां देसूं म्हे तो तनें दुख ना देस्यां इस भांति रोजमर्रह इसी किस्म की गुफ़्तगू करते और सुबह को खुश्क़ खुश्क़ उठ बैठते थे, औरत जवानी में चूर बड़े पशोपेश में थी कि या

इलाही अजब मरद मुखमिस पाले पड़ा है कि हररोज़ योंही कह कह के चुप हो रहता है कि "सेठाणी ! सेठाणी ! थारी चीज वस्त मूं हाथ लगाद्यूं" बस और करना धरना रामजी का नाम, मगर बिचारी कर क्या सकती थी मकान के पिछवाड़े एक लुच्च भगवान घन्टनाथ रण्डजी रहतेथे जिनका दिल सेठ सेठानी का मुकालबा सुनकर बहुत फुरफुरी लिया करता एक दिन रात के एक बजे उसने सेठ जी के घर के आगे मुर्ग की बांग लगाई "कुकुरूकूं ३" सेठ बोले "अड़े थारो भलो होय तड़को है गयौ, मुह बोल्यौ, चलें बगीचों चालें" ऐसे कह कर सौर से निकल लोटा डोर ले बगीचे को लुढ़कते पुढ़कते चल दिये थोड़ी दूर जाके चौकीदारने पहरे में बिठला लिया उधर घन्टानाथ रण्डजी सेठ जी की बोली बोलता अन्दर घर के घुसगया कि "अड़े बेटी का बापकी अबी तौ घणों अंधेरौछै, तेरे मुसड़ेकी घणी रात छै" यह कह के सौर में जा घुसा और सेठाणी से बोला "सेठाणी ! सेठाणी ! थारी चीज वस्त मूं हाथ लगा द्यूं" वह बोली "भल्यांई" फिर तौ रण्ड जी ने भली भांति हाथ लगाया औरत समझी सेठ जी अब हुस्यार हो गये मगर यह नहीं जाना कि सेठ जी नहीं हैं दूसरे जेठ जी हैं । सबेरा होने पर लुच्च चंपत हुआ सेठ जी न्हा धो कर सीराम, सीराम, सोवल्लभ, सी वल्लभ करते घर आये रात को मामूली तौर पर सौर में बोले 'सेठाणी ! सेठाणी ! थारी चीज वस्त मूं हाथ लगा द्यूं" उसने जवाब दिया "भाईकी सूं ! भाईकी सूं ! कालि कासा हाथ लगाय द्यो" सेठ समझगया कि "हां कढ़ि गयौ कोई बेटी को कड़ा दाग । अड़े हां खबड़

पड़ गी वो सुसड़ो मुड़गा बोल्यौ मुड़गा बुई धीकौ कड़ा दगा कढ़ि गयौ दगा। अब कें आवै देखूं सुसड़ौ बु है कि मैं हूं—हूं—भाई की सूं कुछ दिनों के बाद घन्टा नाथ रन्ड जी फिर मुर्गे बन कें चिल्लाये और दरवाजे पै आ के बांग दी "कुकरूंकूं,, सेठ बोले "मड़ें तेड़े घड़ के और मड़ जाय तू" व्याह कर सुसड़े व्याह जासूं काम चलै इण बातणमें कहा धड्यौ है" फिर एक दिन सेठ जी पूजामें वैठे थे कि कहीं का तार आया तब सेठजी ने एक खिदमदगार के लड़के को बुलाके कहा छोड़ा हँण मन्ना! बारेक मुणीमजी ने तौ अठै बुलाल्या' थोड़ी देरमें लड़केने आके कहा "महाराज! मुनीमजी तौ भाभो जी के पासछैं वहां बही खाता कर रह्या छैं भाभीजी को चौपड़ा देख रह्या छैं" सेठजी झिड़क के बोले "चुप्प साड़ा चुप्प, दुणियां सुणेगी चुप्प कड़न दे खातौ कड़नदे देखन दै वही लिखण दे चौपड़ा लिखण दे मुणीम जी मालिक छैं चय्यै सो कड़े पण खबड़दार बही खातेकी बात अंणता कहीतौ तू जानै गो"

इस नक़लको देखकर सारी महफिल कहकहे मार २ कर लुढ़कने लगी लोट २ गई फिर एक सुकड़े मुह का पोपला बुड्ढा भांड़ महँदिया डाढ़ी मरोड़ता खड़ा हुआ और बुड़ बुड़बुड़बुड़ बुलबुला के पहले भांड़ से बोला (नक़ल) करो अपनी भांड़ की****"मुणीमजी ने कड़ी तौ कांई बुड़ी कड़ी" एक गुसांई अपणी सगी चाची से अड़ बैठ्यो और चाची के मुंहपर मुंह धड़ के बोल्यौ "अड़ी मेड़ी राणी बहू, राणी बहू राणी बहू चाची!" इसपर एक बोला गजब टूटा गज़ब टूटा, दूसरे ने जबाब दिया अजब झूंठा अजब झूंठा, देख एक गुसाइण

सगे भैय्या के बैठी छै वह गजब टूटा या यह गजब टूटा यह सुन सब "करम फूटा करम फूटा" गाते हुये अपने २ घरको चले गये और महफिल बर्खास्त हुई पीछे रंडियोंकी बिदाईकी तयारी हुई उन्हें बहुत सा रुपया माल असबाब कपड़ा लत्ता साल दुशाले और बहुत कीमती जवाहिरातो जेवर भेट देकर गुसांईजी गद् गद् बाणीसे यों बोलेः

कबीर-पेशवाज तुम मत बनवैयो मत मोतिनको हार ॥
या धन सूं कुरबानी करियो तब हमरो उद्धार ॥
भला ये करम हमारे पुरषन के ॥

इस भांति कुल रण्डियों व कत्थक वगैरह सब बिदा किये और धूम धामके साथ बिवाह समाप्त हुआ और जगतमें जय ३ का शब्द प्राप्त हुआ सबने बिधाता से अञ्जुल पसार २ कर मांगा कि हे दैव इनके यहां सदैव ऐसेही घटा टोप टङ्कार स्वयंवर हों चलते बार कत्थकों ने गुसांई महाराजों को असीसें दीं शिष्य से कहा भाई चिरञ्जीव रह तू इस घरमें इतना सपूत तो हुआ जो हमारी मान्य रखता है बार बधुओंने भी पीठें ठोंकी शिरों पर प्यारसे राम रक्षा का हाथ फेरा और आशी- र्वाद दिया कि हमारे पूर्ण भक्त हो तुम्हारी बुद्धि और भक्ति भाव जैसा हमारे विषय है वैसा सदैव बना रहै किन्तु निशि दिन बढ़ता रहै जिससे कल्याण होय।

प्रिय पाठक गण सतसंग बड़ी बिलक्षण चुम्बक शक्ति रखता है अच्छे संगसे सुधार और कुसंगसे बिगाड़ इन दो बातों का हाल सर्व साधारण पर अच्छी रीति से बिदित है अर्थात् सबको ज्ञात है कि दुर्दान्त कुसंग ने पूर्वकालमें बड़े २ बीर और पराक्रमी धनपात्र तपस्वी

आदिको सत्यानाशमें मिला दिया किसीने सत्यकहाहै॥

दो०—संगति बैठे साधु की, हरे औरकी व्याधि।
संगति बैठे नीचकी, अष्ट प्रहर उपाधि॥

होत सुसंगति सहजसुख, दुख कुसंगकी थान।
गन्धी और लुहार की, बैठो देखि दुकान॥

अब हम एक वर्तमान दृष्टान्त कुसंगके बिगाड़ का दिखाते हैं और साफ साफ जताते हैं कि संगति कैसा असर लोगों पर डालकर खेल खिलाती है यद्यपि इस बिषयके प्रगट करनेसे हमको कुछ प्रयोजन नहींहै क्यों-कि लोग बाग वृथा हमारे ऊपर "काजीजी क्यों दुबले? शहरके अंदेशोंसे,, वाली लान तानोंसे आक्षेप करेंगे तद्यपि हम अपनी हितैषिक वृत्तिसे संपूर्ण खतरों का भय भूलकर भूले बटोहियोंके उपकारार्थ प्रकटही करतेहैं और आशा करते हैं कि बुद्धिमत्ता न्याय शील पक्षपाती होकर बिचार पूर्ब्बक हमारे उचित वा अनुचित कृत्यकी समालोचना करेंगे॥

प्रिय पाठक वर्ग मथुरा के परम प्रतिष्ठित सेठ श्री युत सर्बोपमा योग्य सर्व लक्ष्मीसम्पन्न श्रेष्ठबर वीर धीर महान् यशस्वी तेजवान बिख्यात सेठश्री लक्ष्मीचन्दजी साहब बहादुर बैकुंठ बासीके अनुज परमश्रद्धा भक्तिमान् धार्मिक सकल गुणखानि धर्म धुरन्धर धर्ममूर्ति श्री १०८ सेठजी श्री राधाकृष्ण जी स्वर्गगामी के पुत्र संपूर्ण गुण गणालंकृत सर्बोपमायोग्य बिराजमान सेठजी श्री लाला लक्ष्मण दास जी साहब बहादुर C. S. I. हि० बड़े योग्य पुरुष हैं इनके परंपरा से धर्म के कार्य्य करने और साधु महात्माओं का पालन करने तथा योग्यायोग्यका बिचार रखनेकी मर्य्यादा चली आई है इनके पितामे

बड़े २ नामवरी और सुकृत के काम किये हैं वृन्दावनमें रंगजी का अति जगद्विख्यात मन्दिर बनवाया है जहां सैकड़ों हजारों भूखे अभ्यगतों और गरीब कंगालों का निर्बाह होता है इनके बड़े सर्वदा साधु सन्त पण्डितों आदि देश हितैषी राम जनोंका पालन करते थे परन्तु शोक का बिषयहै कि बर्तमान सेठसाहब महाशय उन्हीं बेश्या भक्त व्यभिचारस्तम्भ गोसांइयोंके दुर्दान्तदुस्सत्संग के प्रभावसे रामजनोंकोभूल रामजनियोंके पोषणमें तत्पर हुयेहैं मथुरामें एक रामजनी पहाड़न बेश्याहै उससे आज दिन सेठ साहब की दांत काटी रोटी का सम्बन्ध है उस पंचशर शक्ति ने ऐसा बशी भूत किया है कि सेठ साहबके घरानेकी निर्मल कीर्ति पर जंगाल चढ़ना प्रारम्भ हुआ है सर्व साधारणको ज्ञातहै कि एक दिन सेठ साहब ने श्रीयुत नीति निपुण न्यायशील विज्ञवर मुनीम मंगीलालजी से (जिनको वह पिता समान मानते हैं और उनकी आज्ञा बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता और उन्हीं का दम इस घरके मरम भरम और धरम करमके लिये गनीमत है) कहा कि पहाड़नके लिये एक शाला हमारी हवेली के चिपट मांही बनवा दीजिये प्रशंसनीय शुभ चिन्तक मुनीम जी ने जवाब दिया कि महाराज मेरी राय में तो अच्छा हो कि हवेली में से जनाने तो दूसरे मकानमें चले जांय और हवेली में उस पर्बत बासिनी भक्त माता भगवती को स्थापन कर दिया जाय यह सुन सेठ महाशय मौन होगये॥

सच्चरित्र पाठक महाशय बृन्द! कहो यह सत्संग का फल है या क्या? यह उन्हीं जनाने गोसांइयों के निकट बैठने की कालौंच है या और किसी के? यह सत्संग

कीर्त्ति प्रचारकहै वा अपकीर्त्ति प्रसारक इस सत्संग से निर्मल नामी घर का बिगाड़ है वा सुधार ? इन व्यभिचार बढ्रुकों का संग सेठ साहब को त्याज्य है व ग्रहण ? विचारशील बिचार करें कि महान् असच्चरित्रता निधान दुर्व्यसन खान महद्दवगुणगण प्रधान गुसांइयों से दूर रह कर सच्चरित्र बनने से सेठ साहब को वास्तव में लाभ होगा वा हानि ? यदि लाभ है तौ क्या ? और जो हानिहै तौ उनको तिलांजलि दे बैठें। किमधिकम्।

उपदेशक चाहता है कि हमारा देश सच्चरित्रबनें और हमारे देश के सब लोग सन्मार्ग अर्थात् राह रास्त पर आकर सुधरहें सचबोलें, झूठ त्यागें, व्यभिचार से बचें, न्यायपरता गहैं तन को अपने कारवारी कामों में लगा के उन्नति करें, परोपकार करें, धन से दीनों का पोषण करें, मन की चञ्चलता मिटा कर शुद्ध रीति से परमेश्वर की सच्ची भक्ति में तत्पर रहें बुरे आचरणवालों का मुख न देखे, ढोंगी और ठगों से बचें, रात्रि दिन स्वमंतव्या-मन्तव्य बिचार ऐसे जालसाजों का जो धोखे से लोगों का धन धर्म हर आप भी कुएँ में पड़ते हैं और अपने जि-जमान या चेला चेली व यार दोस्त मेली मिलापी अ-ड़ोसी पड़ोसी तक को साथ गिराते हैं, संग तजें किंतु हो सके तौ उनकी पोल खोल कर देश भलाई के लिये उन्हें दण्डित करनेका उद्योग करें इसी तरह हम आशा करते हैं कि हमारे सुयोग्य उक्त सेठ साहब हमारी इन भविष्य फलदायक बातों पर ध्यान दे कर अपने बेदाग घराने की नामवरी को धब्बा न लगने देंगे और अपने घर के कुल कारोबार को अपने हाथ में अच्छी तरह लेकर खोटे सुहबतवालों को दूर कर पण्डित नीतिज्ञ

हितैषी साधु सन्तों का सत्सङ्ग करेंगे जिस से उनकी अपकीर्त्ति जो इस सत्सङ्ग से देश भर में छारही है नष्ट हो कर कीर्त्ति का चन्द्र दुग्ध फेनवत् उज्ज्वलता दरसावै।

हम आशा करते हैं कि सेठ महोदय हमारी चेतावनी पर वृथा रुष्ट न होंगे क्योंकि इस में यदि सोलह आना भी उनकी भलाई हो तौ हमारी मेहनत की दाद दें नहीं तौ नहीं-और यदि ग्रन्थकर्त्ता ने किसी की बुराई के निमित्त यह बातें लिखी हों तौ वह भी उसी तरह जैसे इन गुसांइँयोंने "भारतजीवन" अख़बार बनारस द्वारा अति घृणित कटु वाक्य कहवा कर अपना कलेजा ठंडा किया था मुझ पर उसी तरह कृपा करलें।

अब पाठकों को टुक इस "बल्लभकुल" के "गोसांइँयों" की जिन की कुछ व्यवस्था मैं पीछे लिख आयाहूं हालत पर कुछ और भी ध्यान देना चाहिये और बिचारना चाहिये कि इन्हों ने कैसी धोखेदिही से गवर्नमेण्ट की भोली प्रजा को बहका कर आईन बिरुद्ध लूटना जारी कर रक्खा है और मुल्क के बहुत बड़े हिस्से को बिगाड़ रक्खा है अफसोस! रंग! मलाल! फिटकार! इन्हों ने कैसे २ बेजा और फ़ैश चाल चलन व रीत रस्म के तरीके दर परदे में जारी कर रक्खे हैं कि कहने या लिखने में नहीं आसकते, गुजरात की तरफ के भोले लोग इन के पाखण्ड में खूब मोगे बने हुये दृष्टि गोचर होते हैं, हिन्दुस्तान में करीब ५०-६० मूरतें इन महाराजों की हैं जिनकी पूरी तवारीख और तहक़ीक़ात चालचलन अंगरेजी लाईबिलकेश (Liable case- Translation in English) नामक पुस्तक में (जो हमारी महारानी राज राजेश्वरी एम्प्रैस बिक्टोरिया की राजधानी खास शहर लन्दन में

छपी है) अच्छी तरह से बयान किया गया है-उक्त ग्रं-
थकर्त्ता ने तमाम इँगलिस्तान बल्कि कुल यौरप व एशिया
वगैरह कुल ज़मीन भर के बाशिन्दों को आईना कर
के जता दिया है कि इस फ़िरके के बराबर गुप्तजालसाज,
चालाक, मीठा लुटेरा धोखे देनेवाला नास्तिक (स्वयं
Grand-father of God बन कर काफ़िर पन प्रगट करते
हैं) और व्यभिचारी और कोई फिरका पृथ्वी पर नहीं
है-बम्बई के कई अखबार "रास्त गुफ़्तार" वगैरह इनके
ज़ुल्मों का इज़हार हमेशः करते रहते हैं, इन लोगों के
बेशुमार दूत हमेशः मुल्क हिन्द के हर गोशों में फिरते
रहते हैं जिन का ख़ास काम है कि भोले लोगों को
ठगें और बहका कर अपने मालिकों के पास मुंड़ने को
रवाना करें और इस बात की निगरानी रक्खें कि उन
के चेलों में फलां फलां शख्स बे औलाद हैं बेऔलाद
और लावारिश लोगों को दबाया जाता है कि तू अपनी
सारी जायदाद व रुपया फलां ठाकुर व फलां महाराज
पूरण पुरुषोत्तम (Real-God) की भेटकर तू सब स्वर्ग
(Heaven) में पावेगा-निदान बिचारा ऐसी २ दबावटों
और नर्क पड़ने की मिथ्या धमकियों से सात पीढ़ियों
की जुड़ीजुड़ाई कमाई को क्षणभर में खो देता है, हे
ईश्वर क्यों नहीं दीन भारत को स्वप्न से जगाता ?
पाठकों के अवलोकनार्थ कुछ प्राचीन चरित्रावली अर्थात्
बल्लभ कुलीय रहस्यावली लिखते हैं जिस के पाठ का
फल अठारह पुराणों के माहात्म्य से न्यून नहीं है जो
सज्जन पढ़कर ध्यान लगावेंगे अवश्य उत्तम फल पावेंगे॥

घीसी नामक एक ब्राह्मणी बाल बिधवा थी जिसकी
मैत्री एक ढोल ताशाधिपति (ताशेवाले) यवन से थी

धूनी पानीके संयोगसे एक प्रतिष्ठित जुवा गोसांई जी की जन्म पत्रिका की विधि भी उनसे मिल बैठी खासा तिगड्डा होगया वाह "एक लढ़िया दो बैल यह तमाशा देखो छैल" न मालुम लढ़ियाके जुये किस तरह दो आदमी बैलोंके कन्धोंपै एकही समय रक्खे जाते होंगे धन्य है एकही जपस्थली में एक साथ दो ऋषी गायत्री और कलमा पृथक् पृथक् पढ़ते थे।

आचारियों और तरन तारणोंके यही धर्म लक्षण है उन्हीं महात्मा गोस्वामी जीके समयमें एक पारिखजीके बागमें दो घाउड़ी मट्टूड़ी नवीन कोपलें उत्पन्न हुईं इन चन्द्रमाचकोरसे चैानजरे दो चार होनेपर जार २ हुए दूतोंने सुये डोरे लगाके महाराजकी इच्छानुसार उनकी पधरावनी ठहराई उस दिन एक रंग बागमें इस खुशी की गोठ मुकर्रर हुई, पारिखजी संकल्पित पुत्रियोंको शृङ्गार कराय २ रथ में बिठाय अपने साथ ले जाय महाराज के अर्पण किया, उधर अंगीकार विधि होती थी इधर लोगों की चित्तौर के किले टूटने की सी खुशी में ज़ियाफ़तें लड्डू लो लड्डू उड़ते थे कि अचानक एक आर्त्तनाद् हुआ जिसे सुन सब के ग्रास त्रिशंकुवत् जहां के तहां ही रुकगये और त्राहि २ होने लगी, परन्तु बश किसका था यदि टुक भी जीभ हिलावै तौ चांद की आफ़त आवै, बड़ी देर तक राहु चन्द्र का मेला रहा इधर दावत वालों ने भी ग्रहण जान खाना पीना बन्द किया, हा गज़ब विचारी बालिका की बड़ी दुर्गति हुई, पाठक लोग इसी में समझ लें कि ठाकुर श्रीयुत लक्ष्मण राव जी को भी अपने सुई धागेको श्रम देना पड़ा, इस सेवा के बदले पारिख जी को प्रधानकी पदवी दीगई॥

इसके पश्चात् खवास जी ने देखा कि रनथभँवर की गद्दी सर होने पर पारिख जी को गुसांईं जी ने अपना वाइसराय बनाया तो उसने भी अपनी चन्द चौकड़ीको समर्पण किया, विरजी देव की होरा को गुरू की भेंट करते ही सब दरिद्रता की पीरा नष्ट हुई, नई विलायतें फतह होने पर तिजारत पलटी गई पारिख जी के पुण्य का ओर आया खवास ने मंत्री का ठौर पाया । वाह "नये नये ढपले, नये नये राग" ॥

अब लो एक और लतीफा सुनिये कि एक लखपत के सेठ ने एक भूरी बछेड़ी महाराज की भेट करी, उन्होंने एक दिन रान सवारी करके राय बहादुर को भेज दी । राय बहादुर की सवारी के अलावे उनके शाहजादे भी फरवट उसी पै खेलना सीखते हैं ॥

एक समय उक्त गुसांईं जी के कनफुका गढ़ में एक बोंगा बैष्णव की बहू को धर्म २ के बावले कुत्ते ने काटा तो अपने बेटे की बहू जिसका गौना उसी दिन हुआ था लेकर गुसांईं जी के मठ में प्रसादी कराने लाई बिचारी भोली बहू समझी थी कि अंगीकार कराने में गुरू कुछ तुलसी पुष्प देंगे और कोई मंत्र सुनावेंगे मगर उसे यह नहीं मालूम था इस पंथ के गुरुओं का और ही पांचवां वेद और सातवां शास्त्र है और उनके शिष्य होने में कुछ और ही रंगत है "तीन लोक से मथुरा न्यारी" जब गोसांईं राम चन्दन पोते काजल लगाये पान चबाये गोटेदार सब्ज़ दुकलाई ओढ़े पहिले ही से बिल्ली की तरह ताक झांक लगाये घात में बैठे थे कि सास बहू को ले के जा पहुंची और चरण छू बलैया ले बोली जैराज ! यह नैंन्या की बहू कालि ही गौने आई

है सो राज याकों प्रसादी करन लाई हूं सो कृपा कर अंगीकार करिये, हमारे तौ सेवकन के जो कछू है सो राज कौ ही है ॥

गुसांई जी बोले-नैंन्याकी मा तुम बड़ी साधी वैष्णव हौ अहोभाग्य हैं तुम्हारे जो तुम इतनो धर्म विचारौहौ नहीं आज काल दिन पै दिन कलयुग आतौ जायहै सो लोग वहिर्मुख होते जायहैं धर्म कूं जानें न कर्मकूं मानें और मूर्ख गुरुन की निन्दा करें हैं—तुम तौ जानौ हौ नैंन्याकी मा प्रसादी हैवेमें कैसो साक्षात् वैकुंठ लोककौ आनन्द आवे है—क्यों—कहौ या में कछू वैसी बात है तुम सब जानौ हौ ॥

नैंन्या की मा—(मुसक्या कर) अहा महाराज बड़ौ आनन्द आवैहै। धन्य है। अब कृपा कर बहू कों शीघ्र दीक्षा दीजिये नहीं तौ कुठौर पुरा ते नैंन्या आ जायगौ तौ— *****

गुसांई जी-अच्छा तौ नैंन्या की मा तुम नीचे जाओ, बहू को दीक्षादऊं, यों कह उसे टाल कर किवाड़ लगा के बहू के पास आये और उसका हाथ हाथ से पकड़ ज़रा दाबा और तुलसी और जल हाथ में दे घूंघट उघाड़ बोले री नैंन्या की बहू कह "तन, मन, धन, श्री गुसांई जी के अर्पण" बहू थी पढ़ी लिखी होशियार अव्वल तौ भोंगाजी के हाथ दबाते ही कुढ़ गई थी कि "यह सत्यानासी पजरे मुंह का कैसा गुरू है जो सासू जी को टाल के किवाड़ लगा के मूंहकटा हाथ पैर दबाने की जास्ती सी करता है, खैर ईश्वर रक्षा करे" पीछे तन, मन, धन, वाली बांग सुनतेही बोली-महाराज तुम कैसे गुरू हौ, भला विचारौ तौ सही तन का

स्वामी तो मेरा स्वामीहै, मन चंचलहै बसमें नहीं, रहा धन उस पर सासू सुसरके होते मेरा क्या स्वामित्व है ये तीनों बस्तु मेरे अधिकारमें नहीं–इतना सुन गुसांईं जी बोले अरी नैंन्याकी बहू तू कैसी अज्ञानहै तन तेरे पति कौहै यह ठीक पर पहिले तो ताकूं हम अंगीकार करेंगे तब तेरे पति कूं कोई बात कौ अधिकार होगौ-इस पर

गुसांईं जी

बहू बोली बस महाराज बस मैंने छोड़ा आपका मन्त्र, तंत्र, चूल्हे में जाय समर्पण और भाड़ में बलै अंगीकार करने वाले का सिर-तुम गुरूहो या ठगिया?

जब मैंने तुम्हें गुरू माना और आपने मुझे चेली जाना तो आप मेरे बाप और मैं आप की बेटी हुई फिर आप मुझ से ऐसी अयोग्य कहते हो तो अपनी बहिन और बेटी से जो रात दिन तुम्हारे आधीन हैं क्यों चूकते होगे महाराज आप को संसारी गृहस्थाश्रम के नियम

नैंन्या की बहू

बताने चाहियें और कोई भगवान की उपासना की बिधि वा जप का मन्त्र जिस से मन की शुद्धी हो बताना चाहिये या आप उलटा पातिब्रत धर्म खण्डन करते हो महाराज ! बलिहारी !

गुसांईंजी–अरी गुसांईजी की सब बिश्व होय है हम गो लोक ते तु... ...न को उद्धार करिबे ही यहां भू मंडल पर आये हैं हमारे प्रसादी करेते तुम्हारी मोक्ष होयगी तेरी सास, नन्द, जिठानी, ककियासास, तैया-सास सब हमारी और हमारे बाप दादोंकी चेली थीं ये सबअंगीकार भईहैं पर तू बड़ीमूर्खा या घरमें आई अभी से धर्म कर्म कूं नाहें जानें हैं और हमारी सेवामें नाहीं आवैहै तो यह बेल कैसे मगरे चढ़ैगी नैंन्याहू कछू ऐसो ही बहिर्मुख दीखे है जब दोनें ऐसे मिले तो कैसे तुम्हारो कल्याण होगो कहावत है "मियां मिले भीर झौर बीबी मिलीं गट्टो"

नैंन्याकी बहू महाराज अकिक आपकी पाखंडपनेकी चालोंसे मेरा दृढ़ धर्म कदापि नहीं हट सकता मैं सासू से प्रसादी सुनके समझी थी कि कोई प्रकार की उत्तम बात होगी यदि पहिलेंहीसे जानती तो वहांही उन्हे समझा देती तुम जो बार बार कहके झख मारते हो अहं कृष्णत्वं राधा सो आप अपनी बहिनोंके कृष्ण होंगे और किसी भले घरकी बहू बेटी तो आपको** * * * देगी पैजार देखा आप का मांजना यह कह झट कि-वाड़ खोल नीचे सासके पास आई गुसाईंजी फिट्टे मुह साससे कहने लगे नैंन्याकी मा तेरी बहू बड़ी निकम्मी है काहू सुधारे वाले पतित की बेटी दीसै है पीछे बहू सैकड़ों गालियां सुनाती सास बावली चिड़िया को स-मझाती धर्म बचाकर निज घर गई ॥

धन्य है ऐसी बिज्ञा स्त्री को और लाख फिटकार है ऐसे धूर्त्तों पर जो अपनी पुत्री समान चेलियोंसे ऐसा बिचारते –हा छिः छिः

प्रिय पाठक अब जरा आंखें खोल डालो किसी कान मैलियेकी मुट्ठी गरम करके कानके आनि भी तनक तौ पचास मील गहरी खुदा लो मगर मित्रो एक शर्त है कि पेट पर फौलादकी खोल चढ़ा लो अगर कहीं जियादह हजार दो हजार मिनट की हँसी ली तो कहीं फूलकर गणेश न होजाना जी हां अब लो युधिष्ठिरकी रानी द्रौपदीके जेठों को उठा कर सीधा तक्क शहतीर करके तमखेरेकी नुमाइशी चिलम बना के टुक मनानन्द सरस्वती जी को भी लैकचरका नोटिस दे दो ताकि भूले बिछुड़ेकी जिम्मावरीसे दुबारा जुबान न फड़फड़ानीपड़े।

अब हम आपको पतित पावन और अशरण शरण ईश्वर का अवतार दिखाये देते हैं पर एक मानों गुप्त रखना भला क्योंकि "गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः" यह बड़ों का कौलहै नहीं नहीं प्यारे भूलगया बड़े कड़ाहीमें पड़े और कौलके कौले होगये सब संसार में पतितपावन और अशरणशरणके प्राकट्यका प्राकट्य करना जिससे सब संसार भवसागर से पार लगै देखो एक महतरानी यमुना नामक गुजरात की रहने वाली किसी कारण अपने घर से निकल आई और गोकुल गांममें जातकी नाना ब्राह्मनी बनकर रहने लगी जब उक्त गुसाईं जी के यज्ञोंका यश फैला और बहुतसी गद्दियोंकी फतह नसीनीके कारण धर्मध्वजा फहराने लगी तब समस्त देशमें पतितपावन की चर्चा फैली यह सुधि पाय एक उक्का भाई नामक वैष्णव उस भाग्यशाली पेठे को मिठाई को ले पतितपावन जी के नाथद्वार में ले आया क्योंन हो महतरानीजीकी धूनी पानीका संयोगले पहुंचा पतितपावन तो लोगोंको अंगीकार करनेके लिये

गन्धर्बसैन लोक सिन् मुहम्मात लोक गोलोक से उधारे धींग बिना सींगके आयेही थे जमुनाको ब्रह्म सम्बन्धका चूरन देने लगे नाक कान फूं फूं फूं फूं करने पीछे तीर्थ मूर्ति मेहतरानी जमुना को प्रसादी कर जमुना स्नानका सा फल माना क्यों न हो पतितपावनजी ने बाम मा· र्गियों का यह मंत्र सत्य कर दिखाया ॥

श्लोक । वारांगनाप्रयागश्च, श्वपचनीपुष्करस्तथा । चर्मकारीभवेत्काशी, सर्वतीर्था रजस्वला ॥

धन्य है—सच्चे पतितपावन निकले पतितपावन या दिल्लगी भंगन चमारी धोबिन कुम्हारी तेलिन तमोलिन कोई हो जो आया सो शुद्ध किया "जात पात पूछै नहिं कोई हरि का भजै सो हरि का होई" कृष्ण ने सिवरी को पावन किया तौ इन्होंने इसका उद्धार किया "सरमें गिरै सो सांभर होय" पीछे कुछ दिवस तक वह जमुना घरबाहरके चूल्हे चौके तक का काम अंजाम देती रही जब भण्डा फूटा कि यह प्रचण्डा मेहतरानी है तब सब की छिः छिः और फिटकार के कारण नवीन अर्द्धाङ्ग स्वामिनी को बिसर्जन किया परन्तु मन्दिर की अपरस तक न निकाली !

क्यों जी अशरण शरण नाम चरितार्थ हुवा वा नहीं जब महतरानी प्रसादी की तब कुछ शर्म तौ शायद गुसाईं जी को आई होगी ? धन्य है ॥

हाय बेशर्मी तेरा आशरा छीः छीः छीः

बड़े आश्चर्य्य का विषय है इनका मत ऐसा विगड़ाहै कि ये अपने पहिले पैगम्बर के भी कौल फैलको नहीं

मानले इनके आचार्य्य का कथन है कि "विषयाशक्त चित्तानां नैवास्ति शरणं हरिः" सो इस पर ये सौ सौ धूलकी पोटरीडालके मनमें सौसौ गालियां सुनाते होंगे।

(२) पाठक एक इनके भी चचा चन्दू बिगड़े कृपाकर सुन लीजिये गोस्वामी गोपकेशजी महाराज कोटावालेके सिर लोंना चमारी और कलुआ पीरका न जानें कोंन सा बीर सवार हुवा कि अक्कके गधे मसानी के कलेवा हुये एक दिन क्या सूझीकी जनाना भेषकर राजासाहब के महल में घुस गये लेकिन पहरे वालों ने पहचान कर गिरफतार किया ज्योंही कान पूंछ पकड़े घसीटे लातेथे कि जंगीज्वानोंने संगीनोंके बीच कैद किया जब सबेरा हुआ सारा शहर समाचार सुन दर्शन को आया सब ने लम्बी २ डण्डवत कर कहा 'घणी खमां पृथ्वीनाथ! आछौ रूप धस्यो है, धन् धन् राज' पीछे महाराज कोटा ने इन्हें गुरू जान इनकी जान बख्शी की कोटाधिपत बड़े दयालू राजाथे नहीं तो गोबर गणेशजीको लालखां के लक्कड़से ऐसा बांधा जाता कि तमाम गोबर निकल जाता फिटकारके मारे मिथ्या कृष्ण कोटा से कृष्ण मुख कर निकाले गये॥

(३) ब्रजेशजी महाराज बम्बई निवासीको एकपारसल मार लेने के अपराध में दो बर्ष की सख्त सजा हुई मगर अपीलसे पांच बर्ष मुकर्ररकी गई वाहजो चोरोंके सर्दार गवर्नमेंटके आंखोंमें भी धूल झोंकके माल मारनै लगे।

(४) गिरधारी जी महाराज जो दान घाटी ऊपर गोवर्द्धन पर्वत पर रहते थे उन के जुल्म से वहां गौरवोंने उन्हें बरछियोंसे मारडाला इस वारदात को करीब सवा सौ बर्ष का अर्सा हुआ॥

(५) पचासबर्ष पहले गिरधर लालजी महाराज दम्मन गये थे वहां एक लाड़बनियांके घर श्रीठाकुरजीकी मूर्त्ति थी उक्त गुसाईंजी उस मूर्त्ति को जबरदस्ती उठाकर चल दीने बनियें ने यह अत्यचार वहांके मजिस्ट्रेट से कहा मजिस्ट्रेटने गुसांईजी को मूर्त्ति सहित गिरफतार कराया और मूर्त्ति लेकर इतनी मार लगवाईकि पूरण पुरुषोत्तम अवतार जान से खेल गये ॥

(६) व्यालीस वर्ष हुये कि उक्त गुसांईंजीके भाई बिट्ठलेशजी महाराज झालरापाटन पधारे और वहांके राजा को प्रसाद में संखिया मिला के खिला दिया खातेही राजा तुरन्त मरगया राजाके कामदारों और पोलिटिकल रेजीडेंटने गुसाईंजी को गिरफतार किया खोपड़ीपर फटाफट उड़ने से गुसाईंजी ने जहर देना कबूल किया लेकिन वहांके अज्ञान बैष्णवों ने ऐसे पतित की जान बचानेको गवर्नरके पास डैप्यूटेशन (Daputatisn) भेजा लेकिन वहां भी उनका दण्डनीय होना करार पाया और कैद किये गये आखिर गुसाईंजी और उनकी स्त्री आदि सबकीबड़ी कुगतिकी गई अंतको गुसाईं जेलखानेमेंही प्राणांतहुये ।

(७) करीब ५६ वर्षका अर्सा हुवाकि व्रजपालजी महाराज कच्छ गये थे उन्होंने लखपतके वैष्णवोंसे बड़ी जबरदस्ती करके भेट उगाही फिर अभडासेमें गये वहांभी ऐसाही किया यह समाचार उस समय के कच्छके राजा ने सुने तो पच्चीस सवार भेज नादिर शाहकेसे पोते जालिम गुसाईं कज्जाक को कान पकड़ कच्छ की सरहद से बड़ी दोदो पिटपिटके साथ निकलवा दिया ।

(८) ब्रेंगी की बाबत कैदकी सजा का मजा चखनेवाले व्रजेशजीके (पालक पिता) बाप व्रजनाथजी महाराज ३६

वर्ष पहले मांडवी गयेथे उन्होंने वहां बड़े कुकर्म किये इस कारण वहांके वैष्णवों ने उन्हें वहां से एकदम धक्के दिलवा के कृष्ण मुख कर शीतलयानारूढ़ कर निकाल दिया।

(९) काशी वाले रणछोड़जी महाराज कच्छ मांडवी गये थे वहां उन्होंने बड़ी अनीतें की और भलेमानसों की स्त्रियोंको बिगाड़ा लोगों ने उनके यहां औरतों का जाना बिलकुल बंद किया जब इन कुकर्मी जी की करतूतें वहांके हाकिम को ज्ञात हुई तौ उसने सं० १९१९ में उन को निकाल देनेका हुक्म दिया गुसांई जी मांडवी छोड़ चले आये॥

(१०) जैपुरके महाराज पहले वैष्णवहीथे इस कारण दो मन्दिर वहां गुसाईं लोगों के थे जिन में राज की तर्फ का बंधान था सं० १९२२ में राज की तर्फसे वैष्णव धर्म की परीक्षाके लिये कितनेही प्रश्न महाराज वगैरह वैष्णव आचार्यों से किये गये तिन प्रश्नों के उत्तर निरक्षर भट्टाचार्य्य गुसाइयों से कुछ न बन पड़े इसलिये राजाराम सिंहजीने गोकुल चन्द्रमाजी और मदनमोहन जीके मन्दिरोंका खानपान जप्तकर भोंगाभट्टों को निकल जाने का हुक्म दिया आखिर दोनों मन्दिरोंके गुसाइयों को रो पीटकर निकलनाही पड़ा।

(११) उदयपुर के महाराणा भी असल में वैष्णव हैं वैष्णवों का बड़ा मन्दिर श्रीनाथ जी का उदयपुर के राज्य में है और श्री नाथ की भेट उदयपुर राज्य के क़रीब ३५ ग्राम हैं नाथजी के मन्दिर की गद्दी पर गिरधरलाल जी महाराज मालिक थे उन्हों ने उदयपुर के दरबार का हुक्म न माना और पोलीटिकिल् एजंट की रूबरू जो

इक़रार लिखे थे वे नहीं पाले इस वास्ते उदयपुर के दर्बार ने फ़ौजी मनुष्य भेज कर गिरधरलाल जी को ईसवी सन् १८९६ की तारीख ६ मई को कैदकर लिया और उन को गद्दी से पद भ्रष्ट कर मेवाड़ से निकाल दिया और उन की जगह उनके लड़के गोबर्द्धनलाल को बिठाया उदयपुर के राणासाहब के यद्यपि गिरधरलाल जी गुरू थे परन्तु राजकीय आज्ञा भंग करने के कारण ऐसी मौज उड़ानेवाला गुसाईं एक पलभर में साधारण आदमी बनादिया गया।

(१२) सज़ायाफ़्ता ब्रजेश जी के बाप द्वारकानाथ जी महाराज का मन्दिर पोरबन्दर में है उस मन्दिर में एक समय पोरबन्दर के राणासाहब दर्शन करने आये, उस वक्त गुसाईं जी ने उनसे कहला भेजा कि तुम अपनी तलवार वगैरह मन्दिर बाहर रख के मन्दिर में आवो राणा सुनतेही आग भबूका हो वापिस लौट गया और अपनी रियासत की दी हुई आमदनी बन्द कर दी और वैष्णव धर्म छोड़ शैव हो गया।

(१३) दण्ड भोगी ब्रजेश जी महाराज अपने जाम नगर में रहते थे इनके मकानके नीचे जाम साहिब की रंडी का मकान था गुसाईं जी ने एक दिन अपने मकान पर से आखें लड़ाते२ उस रंडी के ऊपर थूक दिया बेश्या ने शिकायत जाम साहब से की उन्हों ने उसी दम गुसाईं जी को नगर से निकलवा दिया इसके बाद वे बम्बई गये "दीदबाज़ी का मज़ा जां बाज़ी है"।

(१४) यदुनाथ जी महाराज ने सम्बत् १९१७ की साल में उनके व्यभिचार की क़लई खोलने और उनके अत्याचारों का पाप घड़ा फोड़ने और उनके ढोंग की पोल

गवर्नमेण्ट के कानों तक उघाड़ने के बदले "सत्यप्रकाश" पर नालिश की इस मशहूर मारूफ मुक़द्दमे का अन्त पैंतालीस दिन की बहस के बाद हुआ, गवर्नमेण्ट को भलीभांति ज्ञात होगया कि "यदुनाथ जी तथा और सब गुसाईं व्यभिचार के कीड़े हैं, और यदुनाथ जी ने जानबूझ कर झूंठी सौगन्दें खाई है वगैर: २" आखिर को ५० हज़ार रुपया खर्च के "सत्यप्रकाश" की चरण पादुकाओं में उक्त गुसाईं को भेट करने पड़े और कहना पड़ा कि "भूले बनियां भंग खाई अब खाऊं तौ रामदुहाई" इसके सिवाय अदालत में झूंठी सौगन्द खाने की सजा के डर से यदुनाथ जी को तीन बर्ष तक हैदराबाद के जंगल में धूल फांकनी पड़ी तब जान बची नहीं तो "गरमा गरम चार चपाती और चमचे भर माश (उर्द) की दाल चखनी पड़ती"।

वाह जी गुसाईं जी "चोरी और शहजोरी" जब तक ऊंट पहाड़ के नीचे नहीं जाता अभिमान हीन नहीं होता, पचास हज़ार के पचास हज़ार देने पड़े और इज्ज़त की इज्ज़त किरकिरी कराई ठीक है "पापी का माल अकारथ जाय धोबी की हातें गदहा खाय" "माले हराम बूद बजाये हराम रफ़्त"।

सत्य कहने और ठगियों का जाल खोलने से सत्यप्रकाश का बेड़ा पार होगया 'सत्य की नाव नरसिंह खेवै दुष्ट के लात बजरंग देवै'।

(१५) गोकुलउच्छव जी महाराज ने एक ब्रजबासी की स्त्री से बड़ी अनीति की यह खबर उसके पति ने सुनी तौ नंगी तलवार ले गुसाईं जी का शिर काटनेको कटिबद्ध हुआ, गुसाईं जी ने उस के पैरों में पगड़ी रक्खी और

२००००) रुपया देने का कौल किया परन्तु उस समय महाराज के घर में चून तक की मिसल न थी रुपया कहां से आवै तब यह क़रार हुआ कि महाराज परदेश जा कर रुपया कमा कर ब्रजबासी को दें और जब तक कुल रुपया न चुका देवें पगड़ी न पहरें।

(१६) द्वारिकानाथ जी महाराज के काका के लड़के ब्रजनाथ जी का देहांत हो जाने पर उनकीस्त्री चन्द्रावली बहू जी द्वारिकानाथ जी के शामिल रहीं लेकिन तुरंगवासी ब्रजेश जी ने अपने बाप और चाची चन्द्रावली बहू जी की निस्बत यह इलजाम लगाया कि 'इन दोनों की आपस में दोस्ती है और दोनों को दुष्ट कर्म करते हुये मैंने अपनी आंखों से देखा है' जाम साहब ने बाप का अत्याचार खास उसके सपूत पूत की जबानी सुन कर सच जाना और द्वारिकानाथ जी को बड़ी बेइज्ज़ती के साथ ब्रजनाथ जी के मन्दिर से निकलवा दिया।

(१७) बल्लभ जी महाराज ने एक मुसलमानी स्त्री को अपने घर में डाल लिया, इस कारण जाति बहिष्कृत हुये, करीब १० बर्ष तक उनका हुक्का पानी जात से अलग रहा मगर बुढ़ापे में जात के शरीक होगये इस बात को करीब ४१ बर्ष हुये।

पाठको! मुसलमान से हिन्दू बना लेना इसी जात को याद है।

(१८) एक बीकानेरिनी महेसेरिन डागाबों की बेटी और डागानियों की बहू रुक्मणी बाई बिधवा को पेट महाराज देवकीनन्द आचारी जी ने रख दिया करीब १४ बर्ष के भये कि महाराज तीसरी बार बीकानेर प-

धारे यह यश किया और कामबन में आय कर गिराय दिया राज्य का खौफ वहां भी था और राज्य कर्मचा-रियों की यहां भी सेवा घोड़ी बछेड़ी से करनी पड़ी क्या येही आचारियों के पर्म धर्म हैं क्या येई रिफारमर भारतका कल्याण कर सकते हैं क्या इनीकी फूंकसे अंध परम्परा वो भेड़धसान वो कान फुकावा भवसागर से पार हो सक्ते हैं कदापि नहीं ?

(१९)-टीकम जी महाराज ने भी एक मुसलमानी स्त्री से नियोगकरते थे एक समय पुण्डरपुरगये, वहां बिट्ठल नाथ जी के मन्दिर में इस अर्द्धांगिनी को भी ठाकुर के चरण स्पर्श कराने ले गये परंतु मन्दिर में जब उस औ-रत ने अपने भाई को आवाज़ दी तो मन्दिर के पुजा-रियों ने ताड़ लिया कि यह औरत मुसलमानी है फिर उसी दम पंडों ने टीकम जी समेत सब को 'पाद्यं पा-द्यम्" करके मन्दिर बाहर धक्के देके निकाल दिया और गुसाईं को बड़ी लानत मलामतदी कि "धिक्कार पापी म्लेक्ष काम तुम्हारे चांडालों के से और बने फिरो अव-तार, गोलोक प्रत्यागत ब्रह्म, हाय! हाय! अंधेर! अंधेर!

प्रिय आर्य्येगण! पहले तीन युगों में सगुण ब्रह्म ने धक्के नहीं खाये थे सो इस युग में नाना अवतार ले अ-पनी इच्छा पूर्ण की॥

(२०)-बेट में छप्पन भोग हुआ था उसमें गोपकेश जी महाराज अपनी बिवाहित स्त्री सहित गये थे दर्शनों के समय दोनों स्त्री पुरुष आदि सब मन्दिर में जाते थे एक दिन गुसांईं जी ने अपने सिपाही से एक सरकारी सिपाही को धक्के दे के निकलवाया बस धक्के देते ही कई सरकारी सिपाही गोपकेश जी और उनकी स्त्री

वगैरः पर चढ़ि बैठे और सब ने इतनी मार लगाई कि छठी की याद आगई और सब प्रसादी खाया पिया निकल गया, एक दिन छप्पनभोग बन्द रहा फिर काम चल निकला॥

इस प्रकार के और भी सैकड़ों मार के हमारे पास मौजूद हैं परंतु स्थान के अभाव से लिखे नहीं गये॥

हा! जगद्धितेच्छुक भद्र बर्ग! आप ने उक्त लिखित दुर्घटनायें देख कर सब शारांश समझ लिया होगा अतएव आप से निवेदन है कि सब मिल कर समस्त देश बासी अपने हिन्दू भाइयों को सचेत करो और इन मिथ्या बासुदेवों की माया से बचाकर यश और कीर्त्तिके भागी बन भारतके असंख्य आशिष लहो॥ किमधिकम्बिज्ञेषु।

ओ३म् शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

विशेष सूचना।

दो०—बिना बिचारे जो करैं, सो पाछे पछिताय।
काम बिगारैं आपनों, जगमें होत हंसाय॥१॥

अहह, आज कल धर्म की बड़ी सूक्ष्म गति हो रहीहै न्यायकी ओर तौ कोई आंख उठाकर स्वप्न में भी नहीं देखता जिधर दृष्टि करिये अंधाधुन्ध मच रहाहै इसका मूलकारण क्या? अविद्या। यदि ढूंढ़ाजाय तौ भारतवर्ष में अधिक से अधिक प्रति सहस्त्र एक मनुष्य ऐसा निकलैगा कि जिसके हृदय के कपाट खुल रहे हों और सत्य का प्रकाश जिसके अन्त:करण में दीप्तमानहो और अज्ञानान्धकार तथा मिथ्या पक्षपात की जवनिका जिसके उदर से सर्वथा उठ रही हो और न्यायांकुर

जिसके घट में लहलहाता हो और सत्यज्ञानका चश्मा जिसके चक्षुओ में लग रहा हो अर्थात् जिसको सत्यासत्य, न्यायान्याय और धर्माधर्म पूर्ण ज्ञान हो शेष संख्या अविद्या के अगाध सागर में ऐसी डूब रही है जिसको किसी सभ्य विषय का नाम मात्र भी ज्ञान नहींहै और जिस प्रकार धूर्त, पाखंडी लोगोंने अपनी मोहनी माया का जाल फैला कर उन्हें फंसा रक्खाहै वह उसी प्रकार अंधकूप में पड़े मंडूकवत् टर्र २ में मग्न हो रहे हैं और यद्यपि आजकल हमारी ब्रिटिश गवर्नमेएट के राज्य में हमारी विद्याका निवग्न दीपक पुनः सूर्यवत् प्रकाशित हो गया है तद्यपि वे जन्मांध उलूकवत् अपनी आंख खोल कर इस सत्य प्रकाश के प्रकाश में अंधकूप से निकलना नहीं चाहते और यदि कोई देश शुभचिन्तक जन उनकी मिची हुई पलकों को उघाड़ कर सत्य का सुर्मा लगने का चेष्टा करता है तौ वे चारों ओर से कांउं कांउं मचाते हैं प्रिय आर्य्यगण यदि निरक्षर भट्टाचार्य्य लोग अन्धपरंपरा में भूले रहें तौ कुछ पश्चात्ताप और आश्चर्य की बात नहीं है परन्तु जब खासे विद्वान हो के तथा पूरे देशोपदेशक बन के केवल अल्प लोभके कारण अपना सत्योपदेश छोड़ कर मिथ्या खुशामद करने लगैं तौ कहो कैसे क्लेश और अनर्थ का विषय है॥

देखिये अभी थोड़े दिवस हुये कि मैं ने अत्यंत देश भलाई के लिये "बल्लभ रास चरित्र" नाम एक विज्ञापन पत्र (जिसमें श्री मद् विद्या निधान श्री मन्महाराजाधिराज मथुरा वाले गो स्वामी श्री १०८ श्री पुरुषोत्तम लाल जी के पौत्र व श्री १०८ गोस्वामी श्रीकल्याण राय जी के सुपुत्र पुत्र श्री बल्लभ कमल प्रभाकर गोस्वामी श्री

१०८ श्रीगोपाललालजी महाराज तथा उनके लघु भ्राता श्री बल्लभबंश कुमुद्बन उजागर गोस्वामी श्री १०८ बालकृष्णलाल जी महाराज काकरौली वाले के प्रशंसनीय रांस बिलास का बर्णन था) प्रकाश किया था और उस का प्रकाश करना कुछ किसी की शत्रुता तथा द्वेष डाह न था किन्तु ध्यान दिया जाय तौ उक्त गुसाईं महाशयों की पूरी २ शुभचिन्तकता थी क्योंकि जिन महत्पुरुषों को लोग अपने लौकिक पारलौकिक धर्मों का आश्रय समझ के अपने कल्याण मार्ग ढूंढते हैं यदि वही लोग महाजघन्य दुराचरणों में लिप्त रहैं तौ इससे बढ़ कर और क्या गजब है उनकी बुद्धिमानी उसमें है कि उस चेतावनी पर अपने प्रशसनीय आचरणों को बिलकुल तिलांजलि दे निज कुल धर्माचरण ग्रहण करते और कटाक्षों के कृतज्ञ बन उन्हैं धन्यबाद देते खैर जो हो इससे हमैं कुछ प्रयोजन नहीं क्योंकि—'आग लगन्ता झोंपड़ा साराही जरिजाउ' पर महाशोक तौ हमको अपने प्रिय कृपाकारक ज्ञानवान 'भारतजीवन के सम्पादकजी महाशय के सराहनीय लेख पर है कि जिन्होंने 'बद्दू न कूदा कूदी गौन' का यथार्थ कर दिखाया अर्थात् समस्त गांभीर्य को ताक में धर के तारीख २१ नवम्बर सन् ८१ ई० के पत्र में एक महा घृणित जघन्य लेख प्रकाश किया जिसमें हमारे लिये मन मानती असभ्य गालियां अपनेही करकमलसे लिखकर अपनेको बड़ा प्रतिष्ठापात्र विद्वान वाग्वीर बनाया था प्रिय पाठक बर्ग उस सार गर्भित लेख को देख हम महाराज कलिराज की महिमा और सम्पादक 'भारतजीवन' जी की बिमल बुद्धि का स्मरण करके बड़े प्रसन्न हुये थे और चाहा था कि इस

का हर्ष शोक मानना और संपादकजी को इसका हि-साब, किताब, लेखा, ब्यवरा समझाना उचित नहीं है परंतु जब अनेक देशहितैषी मित्रों ने प्रेरणा की और रात्रि दिन दबावट डाली कि इस अवसर पर तुम को चुप बैठ रहना ठीक नहीं है क्योंकि मर्कटकी थोड़ीसी घुड़की का सहन समस्त बस्त्रों का चीर २ करना होता है, तब मुझे अपना प्रण तृण सम तोड़ कर उनको संपातिका अधीन होना पड़ा निदान ता० १० अप्रैल के दिन स्थान इलाहाबाद में श्रीयुत न्यायशील पण्डित केदारनाथ साहेब डिपुटी मेजिस्ट्रेट दरजे अव्वल के इजलास में कानून ताजीरात की दफे नम्बर ५०० के अनुसार नालिश पेश की और सभ्यतालंकृत संपादकजी का सार गर्भित प्रकाश मय लेख भी मजिस्ट्रेट की मेज पर विराजमान किया गया उसके दर्शन कर डिपुटी साहब मौसूफने संपादक 'भारतजीवन' के भवनपर सम्मन अर्थात् निमन्त्रण पत्र भिजवाया और मुकदमेकी ता० २१ अप्रेल नियतकी संपादकजी मुकद्मे से ४ दिवस पहले बनारस से इलाहाबाद पधारे और इलाहाबाद की गली २ में रुदन करते फिरे और यत्र तत्र मेरे मित्रोंसे गद्गद्बाणी करके दण्डवत प्रार्थना करते थे कि मैं अपने किये पर बड़ा शोक करता हूं मेहर्बानी करके आप लोग मेरेको क्षमा करावें अब मेरी लाज इलाज तुम्हारे हस्तगत है और मैंने अनुचित लेख अपनी स्वाधीनतासे नहीं दिया अब मैं दीन होकर अपनी मुआफी मांगता हूं और आशा करता हूं कि मिष्टर बिलाकट साहब अपनी उदारता पूर्बक मुझ दीन हीन के अवगुणों की ओर न देखकर मुझे आज क्षमा करेंगे और मैं भी आज पश्चात् ऐसा अयोग्य लेख कभी न दूंगा और उनकी कृपा का भक्षी कृतघ्न न हूंगा ऐसी गिड़गिड़ाहट देख श्रीयुत बिद्या

सम्पन्न श्री पण्डित मदनमोहन मालवी बी०ए० एडीटर इनडियानयूनियन और श्रीयुत पंडित गन्नाथ शर्म्मा राज वैद्य सम्पादक आरोग्य दर्पण व मंत्री गोरक्षणी सभा प्रयाग और श्रीयुत बाबू चारूचन्द्र जी साहब म्यूनिस्पिल कमिश्नर आदि कई प्रतिष्ठित महाशयों ने मुझ से कहा कि अय मिष्टर ब्लाकट साहब तुम्हारे लिये जो कुछ कटु वाक्य सं० भा०जी०ने लिखे हैं यदि हम उनपर दृष्टि करते हैं तो तुम से कुछ क्षमा इनके लिये नहीं मांग सक्ते परंतु सं० जी की हिलकियां देखकर हमको बड़ी करुणा होती है और इनकी त्राहि २ जी को पिघलाती है इस लिये आप इन्हें क्षमा कर यश लीजिये और इनके अकृत्य कृत्य पर किंचित ध्यान न दीजिये निदान संपादक रामकृष्णजी वा उनके भाई राधाकृष्ण जी दोनोंकी अश्रु धाराओंने मेरी क्रोधाग्नि को दुग्धो फानवत बिलकुल शांत कर दिया किंतु बड़ी दया उत्पन्न हुई और उन्हें क्षमा करके राजीनामा दाखिल क[र] दिया उक्त संपादकजी को जो २ क्लेश इलाहाबाद में ग्रीष्म के तप्त झोंकों आदि के कारण से हुये उनको स्मरण कर कलेजा मुंह को आता है कि हा शोक लोभ ने जो : आपत्ति बिचारे सं० भारतजीवन को दिखलाई वो किस को न दिखलावै और यदि उक्त लिखित महाशय अपन[ी] सुलह कुल वृत्ति से सं० जी का फन्द न कटावते तो मालूम (ईश्वर न दिखावै) उनके कोमल शरीरकी क[्या] दशा होती इससे सब मनुष्योंको उचितहै कि बिना वि[च]ारे वृथा लोभ बन्धनमें ग्रसित हो किसी देशशुभचिंत[क] की निन्दा कदापि न करें अब हम पाठकोंके अवलो[क]नार्थ उस प्रार्थना पत्रको नीचे प्रकाशित करते हैं जिस[े] सम्पादक भारतजीवन ने अपने हाथों से लिखकर रा[जी]नामा दाखिल करनेके दिन हमको अर्पण किया